सचित्र

जैन पाठावली

(हिन्दी लिपि)

पुस्तक - १ : श्रेणी १ थी ४ : धार्मिक अभ्यासक्रम

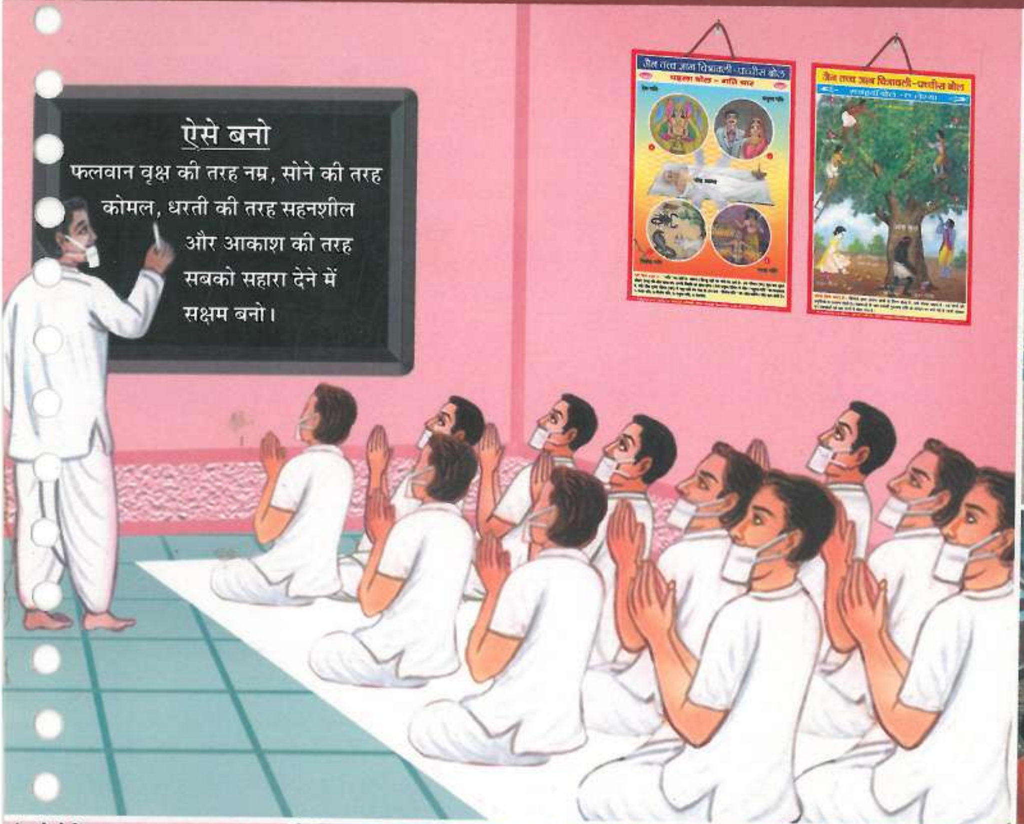

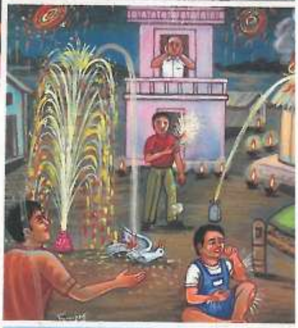

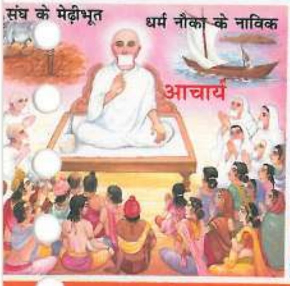

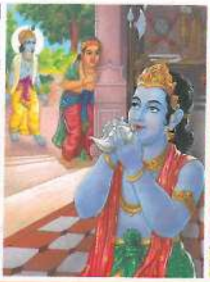

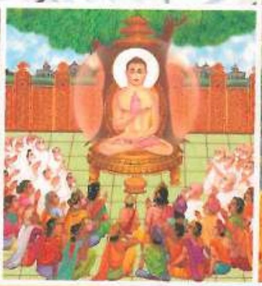

प्रकाशक : श्री बृहद् मुंबई वर्धमान स्थानकवासी जैन महासंघ संचालित धार्मिक शिक्षण बोर्ड

542, जगन्नाथ शंकर शेठ रोड, चीराबजार, त्रीजे माळे, दशाश्रीमाळी कार्यालयनी उपर, मुंबई-400 002

फोन नं. : 22918788, 22018629

जैनशाळा अे जिनशासननुं हृदय छे

मारी धर्म प्रतिज्ञा

सिद्धक्षेत्र अे मारो देश छे। अरिहंत भगवान अने सिद्ध भगवान मारा देव छे । पांच महाव्रतना पालक साधु-साध्वीजी मारा गुरु छे। अरिहंत भगवाननी आज्ञा रूप मारो जैन धर्म छे।

हुं मारा माता पिता तथा वडिलो प्रत्ये सदा विनयी रहीश। हुं नियमित पू. साधु-साध्वीजीनां दर्शन करीश। नवकारशी तप करीश। मारी रगेरग मां जैन धर्म नी खूमारी रहेशे। सर्व जीवो प्रत्ये मैत्री भाव राखीश।

संसार छोडवा जेवो छे। संयम लेवा जेवो छे। मोक्ष मेळववा जेवो छे। आ मारो मुद्रालेख छे। हुं मारा धर्मने खूब चाहुं छुं। तेना समृद्ध अने वैविध्यपूर्ण वारसानो मने गर्व छे।

My Religious Oath

Siddh kshetra is my right native place. Arihant is my God. Followers of five great vows (Paanch Mahaavrat) are my Guru. My Jain religion is as per Arihant god's order & permission.

I will be always obedient towards my parents and elders. I will regularly go for Guru darshan. I will do Navkaarsi. My each and every drop of blood will be full of honour and respect towards Jain religion.

This is my Principle (Mudralekh). I love and respect my religion very much. I will have friendliness towards everybody. I am proud of its rich herritage and variegate. World (Sansar) is worth leaving, Penance (Sāyam) is worth achieving and Salvation (Moksh) is worth gaining.

श्रुत सहयोगी

भव्य जैनशासन जयवंतु रहो, दिव्य जैनशासननो जयजयकार थाओ।
ज्ञान अे चक्षु छे माटे ज, पढमं णाणं तओ दया।।

अमारा पूज्य पिताश्री स्व. प्रभुदास लीलाधर शेठना निर्दिष्ट मार्गथी जीवन धर्म संस्कारोथी नन्दनवन समुं छे। आपना हृदयनी मानवता, बेरोजगारने पगभर करवानी भावना, गुप्तदान, सरळता, प्रामाणिकता, अने उदारता जेवा अनेक सद्‌गुणोनी सुवास अमारा हृदयने सुगंधित करे छे।

हस्ते—आपना परिवारजन—गंगा स्वरूप-वसुमति प्रभुदास शेठ

नलिन-लीआ, अरुण-पूर्णिमा, धीरेन-लीना, कल्पना-नरेन

अभ्यासक्रम : श्रेणी 4

पृ. नं.

सूत्र विभाग (मार्क-50)

1. संपूर्ण सामायिक, प्रतिक्रमण सूत्र पुनरावर्तन (मार्क २०) —
2. प्रतिक्रमण पाठ ४थी १२ व्रतना अर्थ तथा श्रेणी १, २, ३ मां शीखेला अर्थनुं अने प्रश्नोनुं पुनरावर्तन (मार्क १५) —
3. प्रतिक्रमण पाठ ४ थी १२ व्रतना प्रश्नोत्तर (मार्क १०) 87
4. धर्मध्याननो काउस्सग्ग (मार्क ५)

तत्त्व विभाग/संस्कार विभाग (मार्क 30)

1. ३५ बोलनो थोकडो समजण साथे 101,
2. फटाकडा – समय, शक्ति अने संपत्तिनो व्यय 111
3. टी.वी. अेक दूषण 112
4. जैनधर्म अे ज श्रेष्ठ धर्म 113
5. द्वेषनुं स्वरूप (मान, क्रोध) 115

कथा विभाग (मार्क 10)

1. महाराजा मेघरथ 117
2. रोहिणेय चोर 119
3. शालिभद्र 123
4. धर्मरुचि अणगार 126

काव्य विभाग (मार्क 10)

1. रत्नाकर पच्चीसी (सम्पूर्ण) 129
2. साधु वंदना (1 थी 15 कडी) 131

कुल गुण 100

सूत्र विभाग

(प्रतिक्रमण पाठ ४ थी १२मा व्रत सुधीना प्रश्नोत्तर)

पाठ : 4 ज्ञानातिचार सूत्र

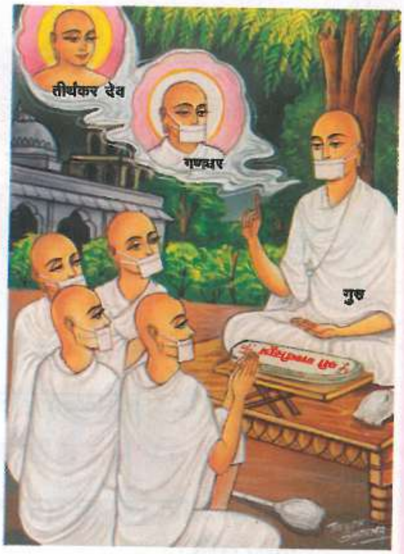

प्रश्न १—आगम (सिद्धांत) कोने कहे छे?

उत्तर— जेनाथी तीर्थंकरे प्ररूपेल छ द्रव्य, जीवादि नव तत्त्वोमां छोडवा योग्य, जाणवा योग्य अने आदरवा योग्य तत्त्वोनुं सम्यग्ज्ञान थाय, तेने आगम कहे छे।

प्रश्न २—आगम केटलां प्रकारना ज्ञाननां पाठमां बताव्या छे? कया कया?

उत्तर— आगमना त्रण प्रकार छे—**(१) सुत्तागमे**—सूत्ररुप आगम, **(२) अत्थागमे**—अर्थरूप आगम अने, **(३) तदुभयागमे**—सूत्र अने अर्थरूप आगम।

प्रश्न ३—सूत्र आगम कोने कहे छे?

उत्तर—तीर्थंकरोना मुखेथी सांभळेली वाणीने गणधर वगेरेअे जे आचारांग आदि आगम रूपे गूंथीने जेनी सूत्र रूपे रचना करी छे, तेने सूत्र आगम कहे छे।

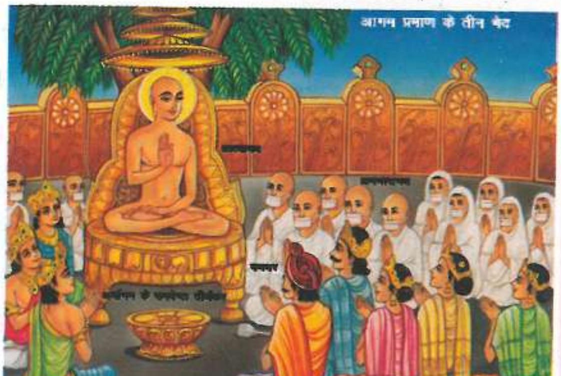

प्रश्न ४—अर्थ आगम कोने कहे छे?

उत्तर—तीर्थंकरोअे पोताना श्री मुखे जे भाव प्रगट कर्या छे, ते अर्थरूप आगमोने, अर्थ आगम कहे छे। सूत्रोना अनुवाद - भाषांतरने पण अर्थ आगम कहे छे।

प्रश्न ५—उच्चार शुद्धि माटे कई वातोनुं ध्यान राखवुं जोइअे?

उत्तर—पाठनो कानो, मात्रा, मींडुं, पद, अक्षर वगेरे ध्यानथी वांचवुं, बोलवुं जोईअे। जेम के 'चेइयं' शब्दनी जग्याअे 'चेवयं' शब्द बोले, तो दोष लागे छे। शुद्धि जाळववा माटे नियमित पाठ फेरववा (परियट्टणा) जोईअे।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) प्रतिक्रमणनो चोथो पाठशेना विशेनो छे? (२) ज्ञानना पाठना अतिचार केटला छे? कया कया?

पाठ : 5 दर्शन सम्यक्त्वनो पाठ

प्रश्न १—प्रतिक्रमणना पांचमां पाठमां शेनुं स्वरूप बताव्युं छे?

उत्तर—समकितनुं।

प्रश्न २—समकित एटले शुं?

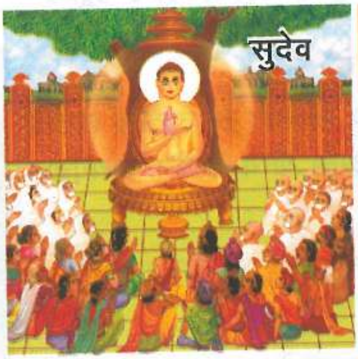

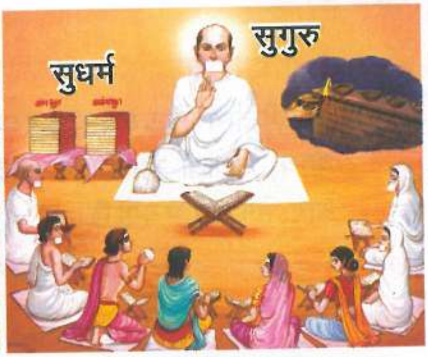

उत्तर—सुदेव, सुगुरु अने तेमना द्वारा प्ररूपित नव तत्त्व आदि सुधर्म प्रत्ये यथार्थ श्रद्धा करवी ते समकित छे।

प्रश्न ३—आपणो जैन धर्म कोणे बतावेलो छे?

उत्तर—राग-द्वेष रहित, केवळज्ञानी जिनेश्वर भगवंतोओ जैन धर्म बतावेलो छे।

प्रश्न ४—परमार्थ कोने कहे छे? 'परपाखंड' एटले शुं?

उत्तर—नवतत्त्व आदि विस्तृत समजणने परमार्थ कहे छे। 'परपाखंड' एटले जिनेश्वरे बतावेला धर्म सिवायना अन्य धर्मो।

प्रश्न ५—परमार्थने जाणवावाळाओना परिचयथी शुं लाभ थाय छे?

उत्तर—(१) नवुं ज्ञान प्राप्त थाय छे। (२) शंकाओनुं निवारण थाय छे। (३) अतिचार शुद्धि थाय छे। (४) ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तप निर्मळ तथा दृढ बने छे।

प्रश्न ६—जिन वचनमां शंका कराय? कारण आपो।

उत्तर—ना, न कराय, कारण के शंका ज्ञानावरणीय कर्म तथा मोहनीय कर्मना उदये बुद्धिनी अल्पताथी थाय छे। ज्यारे जिन वचन तो जेओ राग-द्वेष रहित छे तेवा केवळज्ञानी जिनेश्वरे कहेल छे, ते ज यथार्थ छे, ते सत्य छे। माटे जिनवचनमां श्रद्धा करी पोतानी शंका दूर करवी।

प्रश्न ७—परपाखंडीनी प्रशंसा के परिचय शा माटे न करवो?

उत्तर—परपाखंडीना धर्ममां आडंबर, पूजा के चमत्कारमां छकाय जीवोनी हिंसा थाय छे। ज्यां हिंसा होय त्यां धर्म होई शके नहि। जीवहिंसा द्वारा जीवने दुर्गति अने अशाता ज मळे छे। माटे मोक्षप्राप्तिनी इच्छावाळाओए परपांखडीनी प्रशंसा के परिचय न करवो।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) प्रतिक्रमणनो पांचमो पाठ शेना विशेनो छे? (२) समकितना अतिचार केटला? कया कया?

पाठ : 6

1. अहिंसा अणुव्रत

त्रस जीवनी रक्षा (अहिंसा अणुव्रत)

प्रश्न १—व्रत अेटले शुं?

उत्तर—व्रत अेटले विरति-नियम-मर्यादामां आववुं।

प्रश्न २—प्रथम व्रतने प्राणातिपात शा माटे कहे छे? जीवोनी हिंसा संबन्धी होवाथी जीवातिपात केम नथी कहेवातुं?

उत्तर—त्रस के स्थावर जीवोना दस प्राणमांथी आयुष्य प्राणनो नाश (हिंसा) करवो तेने प्राणातिपात कहे छे। जीव तो अजर अमर छे। तेनो नाश करी शकातो नथी माटे आ व्रतने प्राणातिपात कहे छे।

प्रश्न ३—सूक्ष्म अेकेन्द्रियने हणवाना पच्चक्खाण शा माटे करवामां आवे छे?

उत्तर—ते जीवो आपणाथी मार्या मरता नथी, बाल्या बळता नथी, पण तेमनी हिंसाना पच्चक्खाण न करेल होय, तो अपच्चक्खाणनी क्रिया द्वारा पाप लागे छे माटे।

प्रश्न ४—प्रथम अणुव्रत शेना विशेनुं छे?

उत्तर—बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय आदि त्रस जीवोनी हिंसाथी निवर्तवानुं (त्यागनुं) छे।

प्रश्न ५—श्रावक त्रस जीवोनी हिंसानो त्याग शा माटे करे छे?

उत्तर—श्रावकने पृथ्वीकाय आदि पांच स्थावर जीवोनी हिंसानो त्याग करवानी इच्छा होवा छतां पण ते हिंसा सम्पूर्ण छोडी शकतो नथी। ज्यारे त्रसजीवोमां स्थावर जीवो करतां इन्द्रिय, योग, प्राण वगेरे वधारे होय छे, तेथी तेने मारवाथी वधु दुःख थाय छे। तेथी तेमनी हिंसाथी वधु पाप लागे छे। माटे श्रावक त्रस जीवोनी हिंसाथी बचवानो प्रयत्न करे छे।

प्रश्न ६—शरीरने पीडाकारीनां उदाहरण आपो?

उत्तर—कृमि, वाळो, जू, लींख वगेरे।

प्रश्न ७—आकुट्टि हणवा निमित्ते हणवाना पच्चक्खाण अेटले शुं?

उत्तर—कषायवश, निर्दयतापूर्वक प्राणरहित करवां, मारवानी इच्छाथी मारवुं, तेने आकुट्टिथी मारवुं कहेवाय छे, तेना पच्चक्खाण श्रावक करे छे।

प्रश्न ८—जीवने मारवावाळाने पाप शा माटे लागे छे?

उत्तर—मारवानी दुष्ट भावना अने दुष्ट प्रवृत्तिथी जीवने मारनारने पाप लागे छे। माटे दरेक कार्य जतनापूर्वक (उपयोगथी) हिंसा न थाय ते रीते करवा।

प्रश्न ९—अहिंसा व्रतना पालनथी, कया गुणो प्राप्त थाय छे?

उत्तर—करुणा, क्षमा, दया, कोमळता, मैत्री आदि अनेक गुणो प्राप्त थाय छे।

प्रश्न १०—पहेलां व्रतनी कोटि केटली ?

उत्तर—पहेलुं व्रत २ करण अने ३ योगथी (दुविहं तिविहेणं) पच्चक्खाण लई करी शकाय छे। २ करण × ३ योग = ६ कोटि छे।

प्रश्न ११—प्रथम व्रतना अतिचार केटला ? कया कया ?

उत्तर—प्रथम व्रतना अतिचार पांच छे। बंधेथी भत्तपाणवोच्छेअे सुधी।

प्रश्न १२—प्रथम अणुव्रत केटला समयनुं छे ?

उत्तर—प्रथम अणुव्रत जावज्जीव - जीवुं त्यां सुधीनुं छे।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) जैनोनी कुळ देवी कई ? (२) पहेला व्रतनी कोटि केटली ? (३) प्रथम व्रतना अतिचार केटला ? कया कया ? (४) प्रथम अणुव्रत केटला समयनुं छे ?

पाठ : 7

2. सत्य अणुव्रत

प्रश्न १—बीजुं अणुव्रत शेना विशेनुं छे ?

उत्तर—मोटा जूठथी निवृत्त थवानुं छे।

प्रश्न २—मोटा जूठ केटला प्रकारना छे ? कया कया ?

उत्तर—मोटां जूठ पांच प्रकारनां छे—कन्नालिक, गोवालिक, भोमालिक, थापणमोसो, मोटकी कूडी शाख।

प्रश्न ३—बीजा अणुव्रतमां आवता इत्यादि शब्दथी कयुं जूठ समजवुं जोइअे ?

उत्तर—खोटो आरोप लगाववो, विश्वासघात करवो, भगवानना खोटा सोगंद खावा, खोटो उपदेश आपवो, राजकीय मोटुं जूठ बोलवुं वगेरे।

मोटा जूठनो त्याग (सत्य अणुव्रत)

प्रश्न ४—सत्य व्रतना पालनथी कया गुणो प्राप्त थाय ?

उत्तर—नीडरता, बीजानो विश्वास प्राप्त थाय, लोकोमां प्रिय बने, आदेय नामकर्मनी प्राप्ति थाय आदि अनेक लाभ थाय छे।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) बीजा व्रतनी कोटि केटली ? (२) बीजा व्रतना अतिचार केटला ? कया कया ? (३) बीजुं अणुव्रत केटला समयनुं छे ?

पाठ : 8

3. अचौर्य अणुव्रत

प्रश्न १—अदत्तादान एटले शुं?

उत्तर—कोईपण वस्तुने तेना मालिकनी आज्ञा विना लेवी ते अदत्तादान एटले के चोरी छे।

प्रश्न २—त्रीजा व्रतमां केटला प्रकारनी चोरीनो त्याग छे?

उत्तर—त्रीजा व्रतमां मुख्य चार प्रकारनी मोटी चोरीनो त्याग छे—(१) खातर पाडी - दिवालमां बाकोरुं पाडी घरमां घूसवुं अथवा शस्त्रथी के बळथी मुसाफरोने के घरने लूंटवा। (२) खिस्सां कापवां। (३) ताळां तोडवां। (४) कोईनी पडी गयेली वस्तु उठावीने पोते लई लेवी।

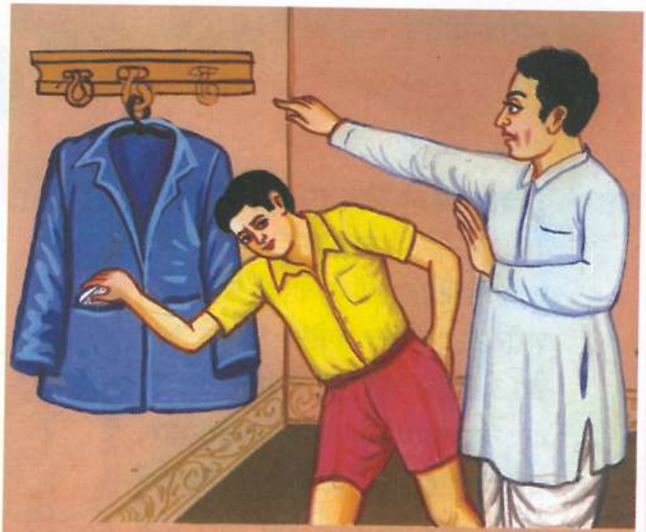

मोटी चोरीनो त्याग (अस्तेय अणुव्रत)

प्रश्न ३—त्रीजा व्रतमां सगां सम्बन्धीने स्थान शा माटे आपवामां आव्युं छे?

उत्तर—सगां सम्बन्धीनी साथे ओळखाणने कारणे जरूर पडये रोजनी वपराशनी वस्तुओ तेमने पूछ्या विना लेवी, ताळुं खोलवुं वगेरे करवामां आवे छे। आवुं कार्य चोरी कहेवातुं नथी। माटे तेनो आगार राखवामां आव्यो छे।

प्रश्न ४—मोटी चोरी कोने कहे छे? नानी चोरी शुं छे?

उत्तर—पूछ्या विना कोईनी एवी चीज लेवी के जेनाथी तेने दुःख थाय, लोकनिंदा थाय, राजदंड मळे, तेने **मोटी चोरी** कहे छे। चोरीनी भावना वगर पोताना उपयोग माटे आज्ञा विना कागळ, पेन्सिल जेवी सामान्य के तुच्छ वस्तु लेवी, ते **नानी चोरी** छे।

प्रश्न ५—अचौर्य व्रतनां पालनथी कया गुणो प्राप्त थाय?

उत्तर—लोकोने विश्वासपात्र थाय, स्नेहीजन नो प्रेम मळे, यशकीर्ति मळे, निर्भयता आदि गुणो मळे।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) त्रीजा व्रतनी कोटि केटली? (२) त्रीजा व्रतना अतिचार केटला? कया कया? (३) त्रीजुं अणुव्रत केटला समयनुं छे?

पाठ : 9

4. ब्रह्मचर्य अणुव्रत

प्रश्न १—स्वस्त्री संतोष केटला प्रकारनो होय छे ?

उत्तर— अनेक प्रकारनो होय छे। जेम के 1. अेक विवाह पछी बीजानी साथे विवाह नहि करुं। 2. पत्नीना स्वर्गवास पछी अन्य साथे विवाह नहि करतां पूर्ण ब्रह्मचर्यनुं पालन करीश। 3. अमुक तिथिओ, पर्वो अने श्रावण महिनामां ब्रह्मचर्यनुं पालन करीश वगेरे।

प्रश्न २—ब्रह्मचर्यना पालन माटे शी रीते चिंतन करवुं जोईअे ?

उत्तर—1. ब्रह्मचर्य अे श्रेष्ठ तप छे। ब्रह्मचारीने देवता पण नमस्कार करे छे। 2. कामभोग झेर जेवां घातक छे, तेनाथी शरीरमां भयंकर रोगोनी उत्पत्ति थाय छे। 3. नरक आदि दुर्गति प्राप्त थाय छे। 4. ब्रह्मचर्यना पालक **जम्बूकुमार, मल्लिनाथजी, राजेमति** विगेरेनुं जीवन केवुं उज्जवळ अने सुंदर बन्युं हतुं ! तेवुं चिंतन करवुं जोईअे।

कामुकतानो त्याग (ब्रह्मचर्य अणुव्रत)

प्रश्न ३—ब्रह्मचर्यनु पालन करवा शुं करवू जोइये ?

उत्तर—1. सिनेमा, टी.वी. न जोता अभ्यास करवो जोइये। 2. मर्यादा वाला वस्त्रो पहरवा जोइये। 3. महापुरुषोना जीवननी वार्ताना पुस्तको वाचवा जोइये।

प्रश्न ४—ब्रह्मचर्यना पालनथी शुं लाभ थाय ?

उत्तर—ब्रह्मचर्यना पालनथी 1. शरीर निरोगी, 2. हृदय बळवान, 3. इन्द्रियो सतेज, 4. बुद्धि तीक्ष्ण, 5. चित्त स्वस्थ रहे छे। 6. कषायोनी अने विकारोनी उपशांतता, 7. मोहभावमां घटाडो, 8. व्रत नियम-संयमनी वृद्धि, 9. भौतिक अने आत्मिक अनेक लाभो थाय छे।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) चोथा व्रतनी कोटि केटली ? (२) चोथा व्रतना अतिचार केटला ? कया कया ? (३) चोथुं अणुव्रत केटला समयनुं छे ?

पाठ :10

5. अपरिग्रह अणुव्रत

प्रश्न १ — पांचमुं अणुव्रत शेना विषे छे?

उत्तर — वर्तमान समये पोतानी पासे जेटलो परिग्रह छे, तेटलो के तेनाथी वधु के ओछा **परिग्रहनी मर्यादा** करवा विषेनुं छे।

प्रश्न २ — परिग्रह एटले शुं?

उत्तर — परिग्रह एटले **मूर्च्छा** (आसक्ति), **ममत्व** (मारापणुं)।

प्रश्न ३ — परिग्रह केटला? कया कया?

उत्तर — ते ९ छे, खेत्त, वत्थु, हिरण्ण, सुवण्ण, धन, धान्य, दुपद, चउप्पद, कुविय।

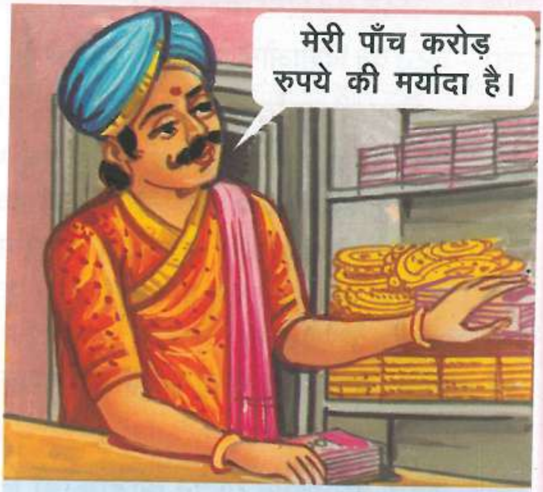

परिग्रहनी मर्यादा (अपरिग्रह अणुव्रत)

प्रश्न ४ — परिग्रहनी मर्यादा केवी रीते करशो?

उत्तर — पोतानी रोजिंदी के वार्षिक जरूरियातनी वस्तुओ करतां थोडीक वधारे छूट राखीने परिग्रहनी मर्यादा करवी। जेम के वर्षमां १० जोडी कपडां वापरतां होय तो १३ जोडथी वधारे राखवा नहि तेवी मर्यादा करवी। (आम तो पोतानी जरूरियात घटाडवानी भावना राखवी जोईए। परन्तु ज्यां सुधी तेम न करी शके त्यां सुधी उपर प्रमाणे मर्यादाओ करी लेवी।)

प्रश्न ५ — अपरिग्रहव्रतनुं पालन करवाथी शुं लाभ थाय छे?

उत्तर — परिग्रह ए पापनुं कारण छे, तेने माटे जीव-हिंसा, साचुं-खोटुं, कावादावा, चोरी वगेरे करी जीव पाप वधारे छे, माटे अपरिग्रहव्रतनुं पालन करवुं जोईए। तेनाथी (१) खराब विचारोथी मुक्ति मळे छे। (२) वस्तुओमां आसक्ति ओछी थाय छे। (३) जीव संतोषी बने छे। (४) कावादावा, झघडा वगेरे मटे छे। (५) धीरे धीरे सम्पूर्ण अपरिग्रही पण बनी शकाय छे।

प्रश्न ६ — आ व्रतमां अतिचार अने अनाचार केवी रीते लागे?

उत्तर — जे जे बोलनी जेटली मर्यादा करी होय, तेनुं बेकाळजीथी, अजाण्यो हिसाब-किताब नहि मेळववाथी उल्लंघन थयुं होय, तो आ बधी मर्यादाओ ते अतिचार छे। लोभ आदिने कारणे जाणी जोईने धारेली मर्यादानुं पालन न करवुं ते अनाचार छे।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) पांचमां व्रतनी कोटि केटली? (२) पांचमा व्रतना अतिचार केटला? कया कया? (३) पांचमुं अणुव्रत केटला समयनुं छे?

पाठ :11 6. दिशा परिमाण व्रत

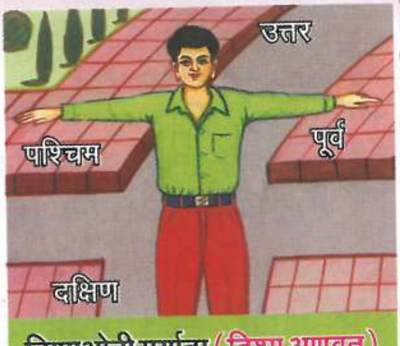

दिशाओनी मर्यादा (दिशा अणुव्रत)

प्रश्न १ — छट्ठुं व्रत शेना विशेनुं छे?

उत्तर — छट्ठुं व्रत दिशाओनी मर्यादा करवानुं छे?

प्रश्न २ — दिशानी मर्यादा केटला प्रकारे कराय छे?

उत्तर — दिशाओ छ छे। जे दिशामां जेटलुं जवुं पडे तेम होय तेटली मर्यादा करवी। जेम के ऊंचा पर्वत के हवाई जहाजथी अमुक कि.मी.थी वधु ऊंचे जवुं नहि। भोंयरांमां के ऊंडी खाणमां अमुक कि.मी.थी वधु नीचे जवुं नहि। पूर्व, पश्चिम, उत्तर के दक्षिण दिशाओमां (तिर्च्छुं) अमुक कि.मी.थी आगळ जवुं नहि। आम ऊंची, नीची अने तिर्च्छी दिशानी मर्यादा कराय छे।

प्रश्न ३ — दिशा परिमाण (मर्यादा) थी शुं लाभ थाय छे?

उत्तर — **लोक असंख्यात योजन क्रोडाक्रोडी** विस्तारवाळो छे। दिशाओनी मर्यादा करवाथी मर्यादानी बहार जवानो त्याग थवाथी ते जग्याअे थती हिंसा आदि पापोनो मोटो कर्मबंध अटके छे।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) छट्ठा व्रतनी कोटि केटली? (२) छट्ठा व्रतना अतिचार केटला? कया कया? (३) छट्ठुं अणुव्रत केटला समयनुं छे? (४) प्रथम गुणव्रत कयुं छे?

पाठ :12 7. उपभोग–परिभोग परिमाणव्रत

प्रश्न १ — उपभोग-परिभोग कोने कहे छे?

उत्तर — जे पदार्थ फक्त अेक ज वखत वापरी शकाय छे, ते **उपभोग** कहेवाय छे। जेमके अनाज, पाणी वगेरे। जे वारंवार वापरी शकाय तेवा पदार्थने **परिभोग** कहेवाय छे। जेम के वस्त्र, आभूषण, शय्या वगेरे।

प्रश्न २ — उपभोग-परिभोग परिमाण व्रत अेटले शुं?

उत्तर — उपभोग-परिभोग योग्य वस्तुओनी मर्यादा करवी। सातमा व्रतमां बतावेल २६ बोलोनी मर्यादा करवी तथा १५ कर्मादाननो त्याग करवो।

प्रश्न ३ — सचेत त्यागथी शुं लाभ थाय छे?

उत्तर — (१) स्वाद पर जीत। (२) ज्यां अचेत वस्तु खावानी सुविधा न होय त्यां संतोष। (३) पू. साधु-साध्वीओने सूझतां निर्दोष, अचेत आहार पाणी वहोरावी शकाय। (४) तिथि अने पर्वना दिवसोमां घरमां लीलोतरी आदिनो आरम्भ न थाय। (5) जीवो प्रत्ये विशेष अनुकंपा वधे।

प्रश्न ४—कर्मादान कोने कहे छे?

उत्तर—जे धंधा अने कार्योमां विशेष हिंसा आदि कारणोथी कर्मोनो विशेष बंध थाय छे, तेने **कर्मादान** कहे छे।

प्रश्न ५—पांचमुं अने सातमुं व्रत अेक करण अने त्रण योगथी शा माटे ग्रहण कराय छे?

उत्तर—श्रावक पांचमा अने सातमा व्रतनी मर्यादा पोतानी जरूरियात जेटली ज करी शकतो होवाथी पोते मन, वचन, कायाथी करुं नहि तेवा पच्चक्खाण लई शके छे। पण परिवार आदिनी जवाबदारीने कारणे परिग्रह आदि मन, वचन, कायाथी करावुं नहि, अनुमोदुं नहि तेवा पच्चक्खाण ले तो व्रत भंग थवानी शक्यता रहेली होय छे। माटे अेक करण त्रण योगथी पच्चक्खाण ले छे।

प्रश्न ६—रात्रिभोजननो त्याग कया व्रतमां आवे छे?

उत्तर—रात्रिभोजननो त्याग अपेक्षाथी सातमा व्रतमां रहेलो छे। उपभोग अने परिभोगनी काळ आश्रित (रात्रीनी) मर्यादा करे, तो ते पालन थई शके।

प्रश्न ७—उपभोग-परिभोगनी वस्तुओनी मर्यादाथी शुं लाभ थाय छे?

उत्तर—1. इच्छा ओछी थाय छे, आवश्यकताओ घटे छे। 2. जीवन संतोषी अने त्यागी बने छे। 3. धर्म आचरण माटे वधु समय मळे छे। 4. घणो मोटो कर्मबंध अटके छे।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) सातमा व्रतनी कोटि केटली? (२) भोजन सम्बन्धी अतिचार कया कया केटला? (३) सातमुं अणुव्रत केटला समयनुं छे? (४) बीजुं गुणव्रत कयुं छे?

पाठ :13 8. अनर्थ दंड विरमण व्रत

प्रश्न १—दंड कोने कहे छे? अनर्थ दंड अेटले शुं?

उत्तर—मन, वचन, कायानी अशुभ प्रवृत्ति के जेनाथी आत्मा दंडाय, तेने **दंड** कहे छे।

जे कार्य पोताना के परिवारना कोई हितनुं न होय, जेनुं कोई प्रयोजन न होय अने जेना कारणे व्यर्थ हिंसा थवाथी आत्मा पापोथी दंडित थाय, तेने **अनर्थदंड** कहे छे।

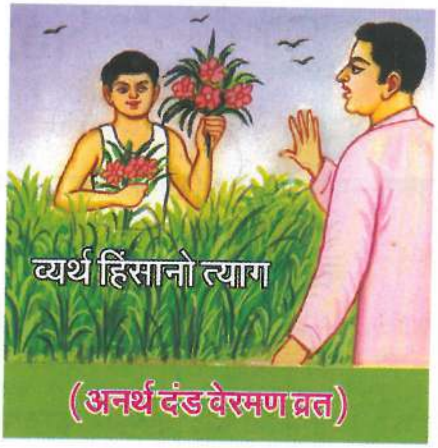

(अनर्थ दंड वेरमण व्रत)

प्रश्न २—आत्माने अनर्थदंडनुं पाप लागे तेवां कार्यो जणावो।

उत्तर—जेम के विकथा करवी, खराब के खोटो उपदेश आपवो, पाणीना नळ खुल्लां मूकवां, जरूर विना वस्तुओनी खरीदी करवी वगेरे प्रवृत्तिओ **अनर्थ दंड** कहेवाय छे।

प्रश्न ३—अनर्थ दंड केटला प्रकारना छे? कया कया?

उत्तर—अनर्थ दंड चार प्रकारना छे। (१) अवज्झाणाचरियं, (२) पमायाचरियं, (३) हिंसप्पयाणं, (४) पावकम्मोवअेसं।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) आठमा व्रतनी कोटि केटली? (२) आठमा व्रतना अतिचार केटला? कया कया? (३) आठमुं अणुव्रत केटला समयनुं छे? (४) त्रीजुं गुणव्रत कयुं छे?

पाठ :14 9. सामायिक व्रत

प्रश्न १ —साधुनी अने श्रावकनी सामायिकमां शो फेर छे?

उत्तर—(१) साधुनी सामायिक जावज्जीवनी होय छे। श्रावकनी अमुक समयनी (बे घडी, चार घडी वगेरे) होय छे। (२) साधुनी सामायिक ३ करण अने ३ योगथी अेम ९ कोटिथी लेवामां आवे छे। श्रावकनी सामायिक सामान्य रीते बे करण अने त्रण योगथी अेम ६ कोटिथी अथवा ८ कोटिथी लेवामां आवे छे। (८ कोटिनो पाठ - करतं पि अन्नं न समणुजाणामि, वयसा कायसा, शब्दो बोलवामां आवे छे)

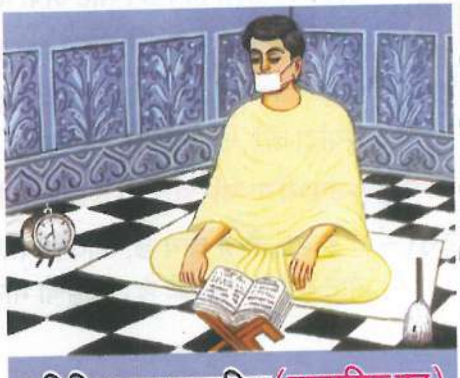

प्रतिदिन शुद्ध सामायिक (सामायिक व्रत)

अपेक्षित प्रश्नो

(१) सावद्य योग कोने कहे छे? (२) नवमा व्रतना अतिचार केटला? कया कया ? (३) सामायिक केवडी? (४) प्रथम शिक्षाव्रत कयुं छे?

पाठ :15 10. देशावगासिक व्रत

प्रश्न १ —देशावगासिक व्रत कोने कहे छे?

उत्तर—पहेलानां बधां व्रतोमां मर्यादाओ आजीवन माटे करी हती, तेने टूंकावी हजी पण वधु मर्यादा प्रतिदिन माटे करवी, ते देशावगासिक व्रत छे।

प्रश्न २—वर्तमानमां आ व्रत संक्षेपमां शी रीते करवामां आवे छे?

उत्तर—वर्तमानमां चौद नियमोथी करवामां आवे छे—

(१) सचेत मर्यादा — खावा पीवानी सचेत वस्तुनी मर्यादा।
(२) द्रव्य — खावा-पीवानां कुल द्रव्योनी मर्यादा।
(३) विगय — दूध, दहीं, घी, तेल, गोळ, खांडनी मर्यादा।

(देशावगासिक व्रत)

(४) स्नान — स्nाननी संख्या तथा तेमां पाणीनी मर्यादा।
(५) पगरखां — बूट-चंपलनी संख्यानी मर्यादा।
(६) दिशा — रहेठाणनी चारे दिशामां जवानी मर्यादा।
(७) शयन — सूवा-बेसवाना पलंग, सोफा, खुरशी वगेरेनी मर्यादा।
(८) ब्रह्मचर्य — यथाशक्ति ब्रह्मचर्य पाळवुं।
(९) कुसुम — फूल तथा सुगंधी द्रव्योनी मर्यादा।
(१०) विलेपन — शरीरे लगाववाना क्रीम, पाउडर, तेल वगेरेनी मर्यादा।
(११) वाहन — वाहननी संख्यानी मर्यादा
(१२) वस्त्र — रोजना पहेरवानां/वापरवानां वस्त्रोनी मर्यादा।
(१३) भोजन — दिवसमां केटलीवार तथा केटलो आहार वापरवो तेनी मर्यादा।
(१४) मुखवास — मुखवास केटली जातना अने केटला वापरवा तेनी मर्यादा।

उपरोक्त धारणा प्रमाणे पच्चक्खाण एगविहं, तिविहेणं, न करेमि, मणसा, वयसा, कायसा, तस्स भंते, पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि।

प्रश्न ३—छट्ठा व्रत अने दशमा व्रतमां शुं फरक छे?

उत्तर—छट्ठा व्रतमां दिशानी मर्यादाना जावज्जीवना पच्चक्खाण करवामां आवे छे। दशमा व्रतमां अेक दिवस-अेक रात्री माटे दिशा अने भोग-उपभोगनी मर्यादा करवामां आवे छे।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) दशमा व्रतना अतिचार केटला? कया कया? (२) दशमुं व्रत केटली कोटिथी ग्रहण करवामां आवे छे? (३) अेक अहोरात्री अेटले केटलो समय? (४) मुनिजीवननां सेम्पलनुं व्रत कयुं? (५) दशमुं व्रत लेवानी तथा पारवानी विधि शुं? (प्रतिक्रमणना पुस्तकना आधारे तैयारी करवी।) (६) बीजुं शिक्षाव्रत कयुं छे?

पाठ :16 11. परिपूर्ण पौषधव्रत

प्रश्न १—पौषधव्रत अेटले शुं?

उत्तर—ज्ञान, दर्शन अने चारित्र वडे आत्माने पोषण आपवुं ते।

प्रश्न २—प्रतिलेखन, प्रमार्जन अेटले शुं?

उत्तर—वस्त्र आदि उपयोगमां आवनार बधां उपकरणोमां कोई जीव छे के नहि, तेनुं निरीक्षण (जोवुं) करवुं, ते **प्रतिलेखन** छे। जीव आदि देखाय तो तेने जतनापूर्वक हळवा हाथे पूंजणी के रजोहरणथी सुरक्षित स्थाने मूकवुं, ते **प्रमार्जन** छे।

कोई पण सांसारिक प्रवृत्ति न करवी (पौषध व्रत)

प्रश्न ३—पौषधमां के दशमा व्रतमां प्रतिलेखन के प्रमार्जन शेनुं शेनुं करवुं जोइअे?

उत्तर— पौषधमां के दशमा व्रतमां पहेलां 1. मुहपत्ति, 2. पछी गुच्छो, 3. रजोहरण, 4. वस्त्र, (आटलुं क्रमथी) 5. संथारियुं, 6. पौषधशाळा, 7. परठवानी भूमि, 8. गोचरीना पात्र अने 9. पुस्तक आदि उपयोगमां लेवाती/लीधेली दरेक वस्तुओनुं प्रतिलेखन करवुं जोईअे।

प्रश्न ४—पौषधव्रतमां शेना पच्चक्खाण करवामां आवे छे?

उत्तर—1. चारे आहारनां, 2. अब्रह्म न सेववानां, 3. झवेरात अने सुवर्ण साथे न राखवाना, 4. फूलनी माळा न पहेरवाना, 5. चंदन आदिनुं विलेपन नहि करवाना, 6. शस्त्र, सांबेलां वगेरेथी थतां १८ प्रकारनां पापकारी कार्य नहि करवाना पच्चक्खाण करवामां आवे छे।

(पौषधव्रत ग्रहण करवानी तथा पारवानी विधि प्रतिक्रमणना पुस्तकना आधारे तैयार करवी।)

प्रश्न ५—प्रहर अेटले शुं? पौषध केटला प्रहरनो कराय छे?

उत्तर— **प्रहर** अेटले दिवस के रात्रीनो चोथो भाग। (अंदाजे पोणा त्रणथी त्रण कलाक) तेने **पोरसी** पण कहे छे। संपूर्ण पौषध आठ प्रहरनो थाय छे। मात्र रात्रीनो पौषध ग्रहण करवो होय, तो चार प्रहरनो रात्रिपौषध ग्रहण करी शकाय छे।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) ११मुं व्रत केटली कोटिथी ग्रहण करवामां आवे छे? (२) अगियारमा व्रतना अतिचार केटला? कया कया? (३) अगियारमुं व्रत केटला समय माटे (अथवा प्रहर माटे) ग्रहण करवामां आवे छे? (४) त्रीजुं शिक्षाव्रत कयुं छे?

पाठ :17 — 12. अतिथि संविभाग व्रत

प्रश्न १—अतिथि संविभाग व्रत अेटले शुं?

उत्तर— गृहस्थीना पोताना उपयोगमां लेवाता होय तेवा आहार आदि १४ प्रकारनी वस्तुओ जेना आववानी कोई तिथि के समय नक्की न होय, तेवा पंचममहाव्रतधारी साधुओने फक्त **आत्मकल्याणनी भावनाथी** वहोरावबुं, तेने अतिथि संविभाग व्रत कहे छे।

दरेक श्रावके आवो लाभ लेवानी रोज भावना भाववी जोईअे।

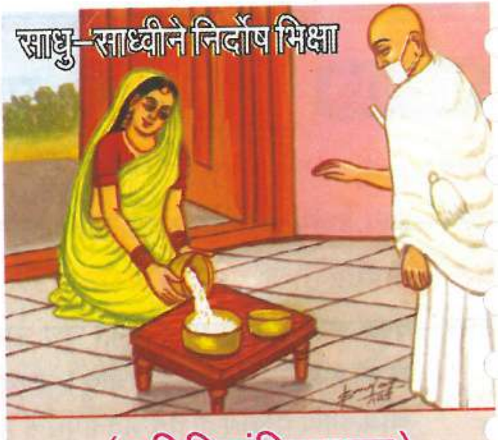

(अतिथि संविभाग व्रत)

प्रश्न २—पाढियारी अने अपाढियारी वस्तुओ कोने कहे छे?

उत्तर— जे वस्तुओने साधु-साध्वी वहोरी लीधां पछी पाछी आपतां नथी, तेने **अपाढियारी** वस्तुओ कहे छे। जे वस्तुओने साधु-साध्वीजी वहोरी लीधां पछी पोताना उपयोगमां लईने पाछी आपी दे छे, तेने **पाढियारी** कहे छे।

प्रश्न ३—पू. साधु-साध्वीजीने केटली वस्तु वहोरावी शकाय? तेमां पाढियारी अने अपाढियारी वस्तुओ कइ कइ?

उत्तर—पू. साधु-साध्वीजीने **१४ प्रकारनी वस्तु** वहोरावी शकाय—

अपाढियारी वस्तुओ ८ छे। तेनां नाम—(१) आहार, (२) पाणी, (३) मेवा-मीठाई, (४) मुखवास, (५) वस्त्र, (६) पात्र, (७) कांबळी, (८) रजोहरण।

पाढियारी वस्तुओ ६ छे, तेनां नाम—(१) बाजोठ, पाटला आदि। (२) पाट, पाटियुं, (३) शय्या, मकान, (४) संथारियु, (५) औषध, (६) भेषज।

प्रश्न ४—औषध अने भेषजमां शो फेर छे?

उत्तर—सूंठ, हळदर आंबळा, हरडे, लविंग वगेरे अेक अेक द्रव्य '**औषध**' कहेवाय छे। हिंगाष्टक चूर्ण, त्रिफळा वगेरे अनेक द्रव्यवाली वस्तुओ '**भेषज**' कहेवाय छे।

प्रश्न ५—शुं पू. साधु-साध्वीने वहोराववा लायक वस्तुओ १४ ज छे?

उत्तर—आ १४ वस्तुओ मुख्यत्वे साधुओने काममां आवे छे, तेथी तेनो उल्लेख करवामां आव्यो छे। तेना सिवाय धर्म उपयोगी पुस्तको, सोय, कातर वगेरे समजी लेवुं।

प्रश्न ६—शुं पू. साधु-साध्वीओ ज दानने पात्र छे?

उत्तर—पू. साधु-साध्वीजीने दान देवुं अे **सुपात्रदान** छे, तेथी आ व्रतमां तेनो उल्लेख करवामां आव्यो छे। प्रतिमाधारी श्रावक, व्रतधारी श्रावक अने स्वधर्मीने पण दान करी शकाय छे। ते सिवाय बीजाने अपातुं दान ते अनुकंपाथी थतुं दान छे।

प्रश्न ७—तीर्थंकरने १४ दानमांथी केटलां अने कया दान देवाय?

उत्तर—तीर्थंकर वस्त्र, पात्र, कंबल अने रजोहरण न राखता होवाथी ते ४ दान सिवायनां १० दान तेमने आपी शकाय।

प्रश्न ८—बारमा व्रतने धारण करनारे मुख्यत्वे कई कई बाबतोनुं ध्यान राखवुं जोइअे?

उत्तर—(१) रसोई बनावनारे अने जमनारे **सचित्त** वस्तुओ दूर राखीने बेसवुं जोईअे। (२) घरमां पण सचेत अने अचेत वस्तुओने **अलग-अलग राखवानी व्यवस्था** करवी जोईअे। (३) काचा पाणीना छांटा, लीली वनस्पति, शाकभाजीनो कचरो घरनी **जमीन पर फेलायेलो न राखवो**। (४) अचेत पाणी बनाव्युं होय तो ते **सांज सुधी राखी मूकवुं**। (५) गोचरीना समये **घरना दरवाजां खुल्लां राखवा** विवेक राखवो। (६) पोते सूझता होय तो **पोताना हाथे वहोराववानी** उत्कृष्ट भावना राखवी। (७) गोचरीनी विधिनी जाणकारी पू. साधु-साध्वीजी पासेथी **जाणी लेवी तथा ते ज्ञानमां वधारो** करतां रहेवुं। (८) पोते सूझता के असूझता होय, तो जे होय ते **साचुं बोलवुं**।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) करण, कोटि वगरनुं व्रत कयुं? (२) बारमा व्रतना अतिचार केटला? कया कया? (३) बारमा व्रतमां शेनी भावना भाववामां आवे छे? (४) चोथुं शिक्षाव्रत कयुं छे?

१२ व्रत अने संथाराना करण, योग अने कोटिने समजावतुं कोष्टक

व्रत	करण	योग	कोटि	विगत
१	२	३	६	दुविहं तिविहेणं
२	२	३	६	दुविहं तिविहेणं
३	२	३	६	दुविहं तिविहेणं
४	२	३	६	देवता सम्बन्धी दुविहं तिविहेणं
	१	१	१	अेगविहं अेगविहेणं
				मनुष्य, तिर्यंच सम्बन्धी
५	१	३	३	अेगविहं तिविहेणं
६	२	३	६	दुविहं तिविहेणं
७	१	३	३	अेगविहं तिविहेणं
८	२	३	६	दुविहं तिविहेणं
९	२	३	६	दुविहं तिविहेणं
१०	२	३	६	द्रव्यादिकनी मर्यादानी बहार
				दुविहं तिविहेणं
	१	३	३	द्रव्यादिकनी मर्यादानी अंदर
				अेगविहं तिविहेणं
११	२	३	६	दुविहं तिविहेणं
१२	०	०	०	करण, कोटि विनानुं व्रत
संथारो	३	३	९	तिविहं तिविहेणं

प्रश्न—महाव्रत अने अणुव्रत वच्चेनो तफावत लखो।

उत्तर— महाव्रत अने अणुव्रत वच्चेनो तफावत—

महाव्रत	अणुव्रत
१. साधु धारण करे छे।	१. श्रावक ग्रहण करे छे।
२. ३ करण अने ३ योग एम ९ कोटिथी धारवामां आवे छे। (३ करण छे : करवुं, करावvुं, अने अनुमोदना करवी। ३ योग छे : मन, वचन अने काया)	२. श्रावकनां व्रतो २ करण अने ३ योग अथवा १ करण अने १ योगथी अथवा १ करण अने ३ योगथी एम ६ कोटिथी अथवा १ कोटिथी अथवा ३ कोटिथी ग्रहण कराय छे।
३. जावज्जीव माटे धराय छे। तीर्थंकर, गणधर आदि महापुरुषो ग्रहण करे छे माटे महाव्रत कहेवाय छे।	३. एक वरसथी जावज्जीव सुधी के पोतानी मरजी प्रमाणे व्रत धराय छे।
४. सर्व जीवहिंसा, सर्व जूठ, सर्व चोरी, सर्व मैथुन तथा सर्व परिग्रहनो त्याग कराय छे।	४. स्थूल (मोटी) जीवहिंसा, स्थूल जूठ, स्थूल चोरी, स्थूल मैथुन तथा स्थूल परिग्रहनो त्याग कराय छे।
५. महाव्रत पांच छे।	५. अणुव्रत पांच, गुणव्रत ३ अने शिक्षाव्रत ४ एम कुल १२ व्रतो छे।
६. पांच महाव्रतनी भावना २५, अतिचार १२५ छे।	६. १२ व्रतना अतिचार ९९ छे।
७. महाव्रतधारी साधुना गुणस्थानक ६ थी १४ छे।	७. अणुव्रतधारी श्रावकनुं गुणस्थान पांचमुं छे।
८. एकथी पांच नरकमांथी नीकळेल जीव पंचमहाव्रतधारी साधु बनी शके छे।	८. पहेलीथी छट्ठी नरकमांथी नीकळेल जीव अणुव्रत धारी शके छे। श्रावक बनी शके छे।
९. जघन्य अष्ट प्रवचननुं ज्ञान होय छे। (पाँच समिति, त्रण गुप्ति)	९. नव तत्त्वनुं ज्ञान अने श्रद्धा होय छे। जघन्य नवकारशी व्रत करता होय छे।
१०. साधु काळ करी मात्र वैमानिक देवमां पांच अनुत्तर विमान सुधी तथा मोक्षमां जई शके छे।	१०. श्रावक मात्र वैमानिकना १२ देवलोक, ९ लोकांतिक सुधी जाय छे।

संस्कार विभाग

(नोंध—विद्यार्थीओअे ३५ बोलनो थोकडो तथा समजण बंने कंठस्थ करवाना रहेशे। परन्तु विशेष समजण थोकडानी नीचे लीटी करीने मूकवामां आवी छे। तेना आधारे मात्र चोथी श्रेणीनी परीक्षामां प्रश्नो पूछाशे नहि, परन्तु उपरनी श्रेणीना अभ्यासने समजवा माटे उपयोगी थशे।)

पांत्रीस बोल

पहेले बोले—गति चार*—(१) नारकी, (२) तिर्यंच, (३) मनुष्य, (४) देवता (**गति** अेटले गमन करवुं)

बीजे बोले—जाति पांच—(१) अेकेन्द्रिय, (२) बेइन्द्रिय, (३) तेइन्द्रिय, (४) चौरेन्द्रिय, (५) पंचेन्द्रिय।

(जीवोना जुदा जुदा विभागने **जाति** कहे छे। जाति नामकर्मथी अेकेन्द्रिय आदिपणुं मळे छे।)

त्रीजे बोले—काय छ—(१) पृथ्वीकाय, (२) अपकाय, (३) तेउकाय, (४) वाउकाय, (५) वनस्पतिकाय, (६) त्रसकाय, (**काय** अेटले शरीर अथवा समूह)

चोथे बोले—इन्द्रिय पांच—(१) श्रोत्रेन्द्रिय, (२) चक्षुरिन्द्रिय, (३) घ्राणेन्द्रिय, (४) रसनेन्द्रिय, (५) स्पर्शनेन्द्रिय।

(रूपी पदार्थोने आंशिक रीते जाणवामां सहायभूत थाय, तेने **इन्द्रिय** कहे छे। ते इन्द्रियो शब्द-रूप-रस-गंध-स्पर्श अेके-अेक विषयने ग्रहण करे छे।)

पांचमे बोले*—पर्याप्ति छ—(१) आहार, (२) शरीर, (३) इन्द्रिय, (४) श्वासोच्छ्वास, (५) भाषा, (६) मन।

बोल-१— नरक-तिर्यंच गतिमां जीव अनंता दु:खोने भोगवे छे। नरकमां **१०** प्रकारनी क्षेत्र वेदना भोगवे छे। ते अनंत **भूख, तरस, ठंडी, गरमी, दाह, ज्वर, भय, चिंता, खुजली अने पराधीनता**। बाह्य सुखनी अपेक्षाअे देवगति सारी छे, परन्तु मनुष्य गतिमांथी ज मोक्ष मळे छे, माटे मनुष्य गति सर्वथी श्रेष्ठ छे।

बोल ५— जीव ओछामां ओछी **त्रण पर्याप्ति** बांधे छे। प्रथम पर्याप्तिने १ समय बाकीनी पांच पर्याप्तिने १-१ अंतर्मुहूर्तनो अलग अलग समय लागे छे छतां कुल छ पर्याप्ति बांधतां अंतर्मुहूर्तनो समय लागे छे। **अेकेन्द्रियने प्रथम चार, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरेन्द्रिय अने असंज्ञी पंचेन्द्रियने प्रथम पांच तथा संज्ञी पंचेन्द्रियने छ पर्याप्ति होय छे।**

(**पर्याप्ति** - जीवनी पौद्‌गलिक शक्ति जेना द्वारा जीव आहार आदिनां पुद्‌गलोने शरीर, इन्द्रिय आदि रूपमां बदलाववानी क्रिया पूर्ण करे तेने **पर्याप्ति** कहे छे अने तेनी अपूर्णताने **अपर्याप्ति** कहे छे। जे जीवने जेटली पर्याप्ति बांधवानी होय, तेटली पूरे पूरी बांधी न ले त्यां सुधी तेने **अपर्याप्तो** कहे छे। ज्यारे जेटली मळवानी होय तेटली पर्याप्ति पूर्ण बांधी ले त्यार पछी तेने **पर्याप्तो** कहेवाय छे।)

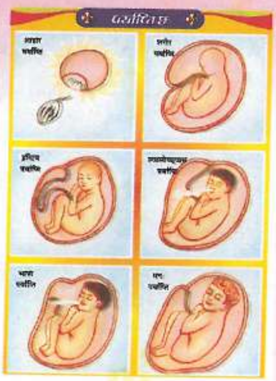

छट्ठे बोले*—प्राण दश— (१) श्रोत्रेन्द्रिय बलप्राण, (२) चक्षुरिन्द्रिय बलप्राण, (३) घ्राणेन्द्रिय बलप्राण, (४) रसनेन्द्रिय बलप्राण, (५) स्पर्शनेन्द्रिय बलप्राण, (६) मन बलप्राण, (७) वचन बलप्राण, (८) काय बलप्राण, (९) श्वासोच्छ्‌वास बलप्राण (१०) आयुष्य बलप्राण।

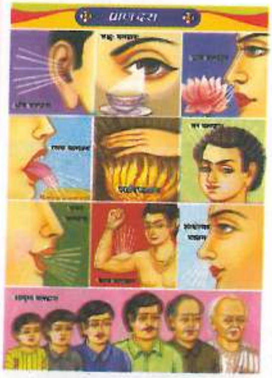

(**प्राण** अेटले जेना संयोगे संसारी जीवोने श्रोत (सांभळवुं, जोवुं) आदि क्रिया थाय छे प्राण–जीवनशक्ति—जेना वडे जीव जीवे छे – तेने प्राण कहेवाय छे। तेना बे प्रकार छे—**(१) द्रव्य प्राण**—जेना योगे आत्मानो शरीर साथे संबंध टकी रहे छे। **(२) भावप्राण**—जीवनी साथे तादात्म्यथी जे ज्ञान आदि गुणो रहेलां छे ते भावप्राण। **द्रव्यप्राण** १० प्रकारना **भावप्राण** चार प्रकारना छे—ज्ञान-दर्शन-सुख अने वीर्य।)

सातमे बोले—शरीर पाँच— (१) औदारिक, (२) वैक्रिय, (३) आहारक, (४) तेजस, (५) कार्मण - (शीर्यते इति शरीर - जे शीर्ण-विशीर्ण-नाश थवाना स्वभाववाळुं छे, तेने **शरीर** कहे छे)

आठमे बोले : योग पंदर— (१) सत्य मनयोग, (२) असत्य मनयोग, (३) मिश्र मनयोग, (४) व्यवहार मनयोग, (५) सत्य वचनयोग, (६) असत्य वचनयोग, (७) मिश्र वचनयोग, (८) व्यवहार वचनयोग, (९) औदारिक शरीर काययोग, (१०) औदारिक शरीर मिश्र काययोग, (११) वैक्रिय शरीर काययोग, (१२) वैक्रिय शरीर मिश्र काययोग, (१३) आहारक शरीर काययोग, (१४) आहारक शरीर मिश्र काययोग, (१५) कार्मण काययोग।

(**योग** अेटले मन, वचन अने कायानी प्रवृत्ति, व्यापार। मनना ४, वचनना ४, कायाना ७ अेम कुल १५ योग छे)

बोल ६ —अेकेन्द्रियने चार, बेइन्द्रियने छ, तेइन्द्रियने सात, चौरेन्द्रियने आठ, असंज्ञी पंचेन्द्रियने नव, संज्ञी पंचेन्द्रियने दश प्राण होय छे।

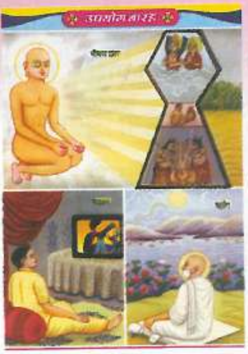

नवमे बोले—उपयोग १२—(१) मतिज्ञान, (२) श्रुतज्ञान, (३) अवधिज्ञान, (४) मन:पर्यवज्ञान, (५) केवळज्ञान, (६) मतिअज्ञान, (७) श्रुतअज्ञान, (८) विभंगज्ञान, (९) चक्षुदर्शन, (१०) अचक्षुदर्शन, (११) अवधिदर्शन, (१२) केवळदर्शन।

(१) **ज्ञान*** एटले जेनाथी वस्तुने विशेष रूपे जाणवी ते।

(२) **दर्शन** एटले जेनाथी वस्तुना सामान्य स्वरूपने जोवुं ते।

(३) ज्ञान, दर्शनमां आत्मानी प्रवृत्तिने **उपयोग** कहे छे।)

दशमे बोले—कर्म आठ*—(१) ज्ञानावरणीय, (२) दर्शनावरणीय, (३) वेदनीय, (४) मोहनीय, (५) आयुष्य, (६) नाम, (७) गोत्र, (८) अंतराय।

(मिथ्यात्व, अव्रत, प्रमाद, कषाय अने योगना कारणे जीव साथे जे बंधाय छे तेने **कर्म** कहे छे।)

अगियारमे बोले—गुणस्थानक १४—(१) मिथ्यात्व, (२) सास्वादान, (३) मिश्र, (४) अविरति सम्यक् दृष्टि, (५) देशविरति (श्रावक), (६) प्रमत्त संजति (साधु), (७) अप्रमत्त संजति, (८) निवर्त्ति बादर, (९) अनिवर्त्ति बादर, (१०) सूक्ष्म संपराय, (११) उपशांत मोहनीय, (१२) क्षीण मोहनीय, (१३) सयोगी केवली, (१४) अयोगी केवली।

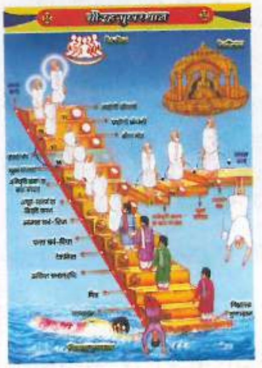

(मोह अने योगना कारणे आत्मानी ज्ञान, दर्शन अने चारित्र रूप गुणोनी तारतम्यता (वध घट) वाळी अवस्थाने **गुणस्थान** कहे छे।)

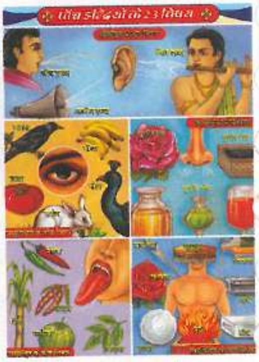

बारमे बोले—पांच इन्द्रियना विषय २३—

श्रोत्रेन्द्रियना ३ विषय—जीव शब्द, अजीव शब्द अने मिश्र शब्द।

चक्षुरिन्द्रियना ५ विषय—काळो, नीलो (लीलो), लाल, पीळो, सफेद। पांच वर्ण।

बोल-९— ज्ञानना बे प्रकार छे—ज्ञान अने अज्ञान। केवलज्ञानीनां वचनोने यथार्थ स्वरूपे जाणे ते **ज्ञान**, केवलज्ञानीनां वचनोने ओछां, अधिक के विपरीत स्वरूपे जाणे ते **अज्ञान, मिथ्यादृष्टिने अज्ञान अने सम्यक्दृष्टिने ज्ञान होय छे।**

बोल-१०— लोकमां अनंता पुद्‌गलो छे। तेमांथी अमुक पुद्‌गलो जीव ग्रहण करी शके तेवा छे। तेवा पुद्‌गलोना समूहने **वर्गणा** कहे छे। तेमां कर्म रूपे बनी शके तेवां कार्मण पुद्‌गलोना समूहने **कार्मणवर्गणा** कहे छे। ते कार्मणवर्गणानां पुद्‌गलो ज्यारे आत्मप्रदेशे लागे त्यारे ते **द्रव्यकर्म** कहेवाय छे, मिथ्यात्व, अव्रत, प्रमाद, कषाय, योगरूप भावोने **भावकर्म** कहे छे।

घ्राणेन्द्रियना २ विषय-सुरभिगंध, दुरभिगंध।

रसनेन्द्रियना ५ विषय-तीखो, कडवो, कसायेलो (तूरो), खाटो, मीठो।

स्पर्शनेन्द्रियना ८ विषय—सुंवाळो, खरबचडो, हलको, भारे, उष्ण, शीत, लूखो (रूक्ष), चोपडयो (स्निग्ध)।

(आत्मा इन्द्रियो द्वारा जे पदार्थोने ग्रहण करे छे, तेने ते इन्द्रियोना विषयो कहे छे।)

तेरमे बोले—पच्चीस प्रकारनुं मिथ्यात्व—(प्रतिक्रमणनी बुकमां छे ते प्रमाणे)

चौदमे बोले—नव तत्त्वना जाणपणाना ११५ बोल—

जीवना १४ भेद—सूक्ष्म अेकेन्द्रिय, बादर अेकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरेन्द्रिय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय, संज्ञी पंचेन्द्रिय। ते सातना अपर्याप्ता अने पर्याप्ता मळी १४।

अजीवना १४ भेद—धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय अे त्रणेना स्कंध, स्कंध देश, स्कंध प्रदेश अेम ९ तथा १०मो भेद काळ, पुद्गलना स्कंध, देश, प्रदेश ने परमाणु अे ४ मळीने कुल १४ भेद।

पुण्यना ९ भेद—(१) अन्न पुन्ने, (२) पाण पुन्ने, (३) लयण पुन्ने, (४) शयण पुन्ने, (५) वत्थ पुन्ने, (६) मन पुन्ने, (७) वचन पुन्ने, (८) काय पुन्ने, (९) नमस्कार पुन्ने।

पापनां १८ भेद—ते अढार पाप स्थानक। (प्रतिक्रमणनी बुक प्रमाणे)

आश्रवना २० भेद—(१) मिथ्यात्व, (२) अव्रत, (३) प्रमाद, (४) कषाय, (५) अशुभयोग, (६) प्राणातिपात, (७) मृषावाद, (८) अदत्तादान, (९) मैथुन, (१०) परिग्रह, (११) श्रोत्रेन्द्रिय, (१२) चक्षुरिन्द्रिय, (१३) घ्राणेन्द्रिय, (१४) रसनेन्द्रिय, (१५) स्पर्शनेन्द्रिय, (१६) मन, (१७) वचन, (१८) काया ते ८ ने (११ थी १८) मोकळा मूकवा, (१९) भंड उपकरणनी अयत्ना करे, (२०) शुचि कुसग करे। अर्थात् सोयना अग्रभाग जेटली पण जीवहिंसा करे।

संवरना २० भेद—(१) समकित, (२) प्रत्याख्यान, (३) अप्रमाद, (४) अकषाय, (५) शुभयोग, (६) जीवदया, (७) सत्य वचन, (८) अदत्तादान त्याग, (९) ब्रह्मचर्य, (१०) अपरिग्रह, ११ थी १८ पांच

इन्द्रिय अने त्रण योगनुं संवरवुं, (१९) भंड उपकरणनी यत्ना करे, (२०) शुचि कुसग्ग न करे। जीवनी दया पाळे।

निर्जराना १२ भेद—(१) अणसण, (२) उणोदरी, (३) वृत्तिसंक्षेप, (४) रसपरित्याग, (५) कायकलेश, (६) प्रतिसंलीनता, (७) प्रायश्चित्त, (८) विनय, (९) वैयावच्च, (१०) सज्झाय, (११) ध्यान, (१२) काउस्सग्ग।

बंधना ४ भेद—(१) प्रकृति बंध, (२) स्थिति बंध, (३) अनुभाग बंध, (४) प्रदेश बंध।

मोक्षना ४ भेद—(१) ज्ञान, (२) दर्शन, (३) चारित्र, (४) तप।

(**तत्त्व** अेटले जेनुं सदाकाळ होवापणुं छे ते।)

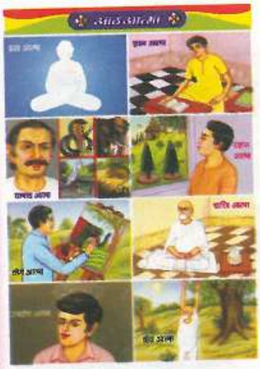

पंदरमे बोले—आत्मा ८—(१) द्रव्य आत्मा, (२) कषाय आत्मा, (३) योग आत्मा, (४) उपयोग आत्मा, (५) ज्ञान आत्मा, (६) दर्शन आत्मा, (७) चारित्र आत्मा, (८) वीर्य आत्मा।

(आत्मा जे गुणोमां प्रवर्ते ते गुणना नामथी आत्मा ओळखाय छे माटे ज्यारे कषाय भावमां होय त्यारे **कषाय आत्मा**। अेम आठे आत्मा माटे समजवुं.)

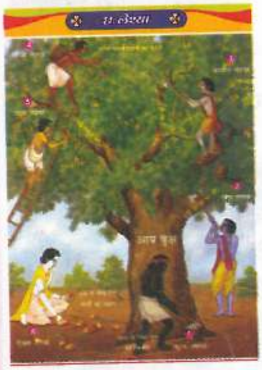

सोळमे बोले—दंडक २४—सात नरकनो १ दंडक; १० भवनपतिना १० दंडक ते (असुरकुमार, नागकुमार, सुवर्णकुमार, विद्युतकुमार, अग्निकुमार, द्वीपकुमार, उदधिकुमार, दिशाकुमार, वायुकुमार, स्तनितकुमार) पांच स्थावरना पांच ते (पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वाउकाय, वनस्पतिकाय) ३ विकलेन्द्रियना ३ ते (बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरेन्द्रिय) १ तिर्यंच पंचेन्द्रियनो, १ मनुष्यनो, १ वाणव्यंतर देवनो, १ ज्योतिषी देवनो, १ वैमानिक देवनो दंडक।

(ज्यां जीव उत्पन्न थईने कर्मनो दंड भोगवे तेने **दंडक** कहे छे।)

सत्तरमे बोले—लेश्या छ—(१) कृष्णलेश्या, (२) नीललेश्या, (३) कापोतलेश्या, (४) तेजोलेश्या (५) पद्मलेश्या, (६) शुक्ल लेश्या।

(कषाय अने योगनी प्रवृत्तिथी उद्‌भवता आत्माना शुभ-अशुभ परिणामने **लेश्या** कहे छे। छ लेश्याम. प्रथम त्रण अप्रशस्त (अशुभ) अने अंतिमनी त्रण प्रशस्त (शुभ) छे।)

बोल-१७— **द्रव्यलेश्या**—परिणामना (अध्यवसायना) कारणे आत्मा ते प्रकारनां पुद्‌गलोने ग्रहे छे, ते **द्रव्यलेश्या** छे ते रूपी छे। **भाव लेश्या**— आत्मानां परिणामो (अध्यवसाय) ते भावलेश्या। ते अरूपी छे।

अढारमे बोले—दृष्टि त्रण—(१) समकित दृष्टि, (२) मिथ्यात्व दृष्टि, (३) मिश्र दृष्टि।

(तत्त्व विचारणानी पद्धतिने '**दृष्टि**' कहे छे।)

ओगणीसमे बोले—ध्यान चार—(१) आर्त्तध्यान, (२) रौद्रध्यान, (३) धर्मध्यान, (४) शुक्लध्यान।

(कोईपण अेक ज विषय उपर मननी अेकाग्रता करवी तेनुं नाम **ध्यान** छे।)

वीसमे बोले—छ द्रव्यना त्रीस बोल—

धर्मास्तिकायना पांच—धर्मास्तिकाय द्रव्यथी-अेक, क्षेत्रथी-लोक प्रमाणे, काळथी-अनादिअनंत, भावथी अरूपी, गुणथी चलणसहाय।

अधर्मास्तिकायना पांच—अधर्मास्तिकाय द्रव्यथी-अेक, क्षेत्रथी-लोक प्रमाणे, काळथी-अनादिअनंत, भावथी-अरूपी, गुणथी-स्थिर सहाय।

आकाशास्तिकायनां पांच—आकाशास्तिकाय द्रव्यथी-अेक, क्षेत्रथी-लोकालोक प्रमाणे, काळथी-अनादि अनंत, भावथी - अरूपी, गुणथी-अवगाहनादान (जग्या आपवी।)

कालना पांच—काल द्रव्यथी-अनंत, क्षेत्रथी अढीद्वीप प्रमाणे, काळथी-अनादिअनंत, भावथी-अरूपी, गुणथी-वर्तनानो गुण (नवाने जूनुं करे)।

पुद्गलना पांच—पुद्गल द्रव्यथी - अनंत, क्षेत्रथी - लोक प्रमाणे, काळथी-अनादि अनंत, भावथी- रूपी, गुणथी - गळे ने मळे। (सडन, पडन, विध्वंसन)

जीवना पांच—जीव द्रव्यथी - अनंत, क्षेत्रथी - आखा लोक प्रमाणे, काळथी -अनादि अनंत, भावथी - अरूपी, गुणथी - चैतन्यगुण।

---

(१) धर्मास्तिकाय—जीव अने पुद्गल जेना वडे गति करी शके ते धर्मास्तिकाय। दा. त. जेम माछली पोतानी मेळे चाली शके छे, पण पाणी तेनी गतिमां सहायक थाय छे।

(२) अधर्मास्तिकाय—जीव अने पुद्गल जेना वडे स्थिर थई शके ते अधर्मास्तिकाय। दा. त. जेम थाकेला मुसाफरने छांयो स्थिर थवामां उपकारक नीवडे छे।

(३) आकाशास्तिकाय—जे बधां द्रव्योने खाली जग्या, आकाश आपे ते आकाशास्तिकाय। दा. त. जेम नक्कर दीवालमां खीली नांखतां अंदर प्रवेशी जाय छे।

(४) काळ—जेनाथी नवा-जूनानी जाण थाय छे। सूर्य अने चंद्रनी गतिथी काळ (दिवस, रात्रि वगेरे) मापवामां आवे छे।

(५) पुद्गलास्तिकाय—जेनो स्वभाव सडन, पडन, विध्वंसन (नाश) छे, तेवा जड पदार्थो।

(६) जीव—जेनामां चेतना लक्षण छे ते जीव।

(जे सदाकाळ रहे छे, जेमां अनंत गुण अने अनंत पर्यायो रहेली होय छे, तेने **द्रव्य** कहे छे। प्रदेशोनां समूहने **अस्तिकाय** कहे छे। काळने कोई प्रदेश नथी।)

एकवीसमे बोले—राशि बे। जीव राशि, अजीव राशि।

(ते ते प्रकारना पदार्थना समूहने **राशि** कहे छे।)

बावीसमे बोले—श्रावकनां व्रत १२। तेना भांगा ४९।

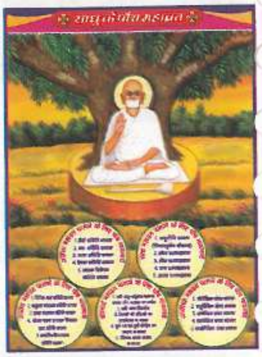

त्रेवीसमे बोले—साधुना पांच महाव्रत। तेना भांगा २५२।

चोवीसमे बोले—प्रमाण चार। प्रत्यक्ष, अनुमान, आगम, उपमान। (जेनाथी अर्थ, पदार्थ जाणी शकाय तेने **प्रमाण** कहे छे।)

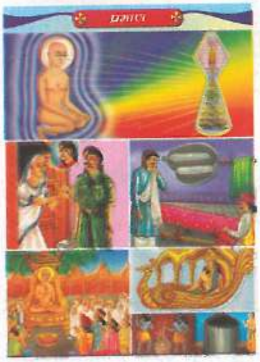

पच्चीसमे बोले—चारित्र पांच— (१) सामायिक चारित्र, (२) छेदोपस्थानीय चारित्र, (३) परिहार विशुद्ध चारित्र, (४) सूक्ष्म संपराय चारित्र, (५) यथाख्यात चारित्र।

(**चारित्र** अेटले जे आवतां कर्मोने रोके छे अथवा संयमरूप आचरण)

छव्वीसमे बोले—सात नय— (१) नैगमनय, (२) संग्रहनय, (३) व्यवहार नय, (४) ऋजुसूत्रनय, (५) शब्दनय, (६) समभिरूढनय, (७) अेवंभूतनय।

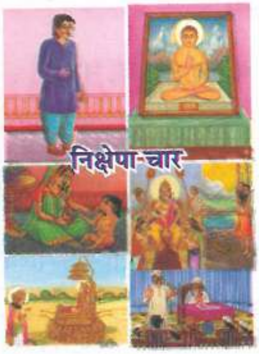

(प्रत्येक पदार्थना अनेक धर्म छे तेना अंश गुण के पर्यायना ज्ञानने **नय** कहे छे।)

सत्तावीसमे* बोले—निक्षेपा चार— (१) नाम, (२) स्थापना, (३) द्रव्‍ अने, (४) भाव।

(वस्तुने समजवा माटे वस्तु उपर आक्षेप (उपचार) करवो अथवा वस्तुने समजवा माटेनो दृष्टिकोण **निक्षेपा छे।**)

* **बोल-२७—नाम निक्षेप**—जीव के अजीवनुं कोई नाम राखवुं ते। **स्थापना**—जीव के अजीवनी आकृति करवी ते। **द्रव्य**—भूतकाळ के भविष्यकाळनी स्थितिने वर्तमानमां कहेवी ते। **भाव**—संपूर्ण गुणयुक्त वस्तुने वस्तु रूपे मानवी ते।

अट्ठावीसमे बोले—समकित पांच—(१) उपशम समकित, (२) क्षयोपशम समकित, (३) क्षायिक समकित, (४) सास्वादन समकित, (५) वेदक समकित।

(सुदेव, सुगुरु अने तेमना द्वारा प्ररूपित नव तत्त्व आदि सुधर्म प्रत्ये यथार्थ श्रद्धा करवी ते **समकित** छे।)

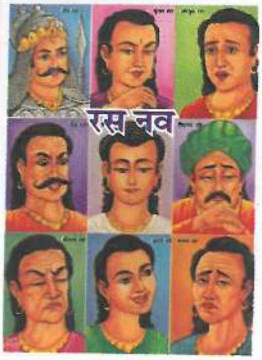

ओगणत्रीसमे बोले—रस नव—(१) शृंगाररस, (२) वीररस, (३) करुणरस, (४) हास्यरस, (५) रौद्ररस, (६) भयानक रस, (७) अद्‌भूत रस, (८) बिभत्स रस, (९) शांतरस।

(जेमां आपणे ओतप्रोत थई जईअे के अेकमेक थई जईअे तेने **रस** कहे छे।)

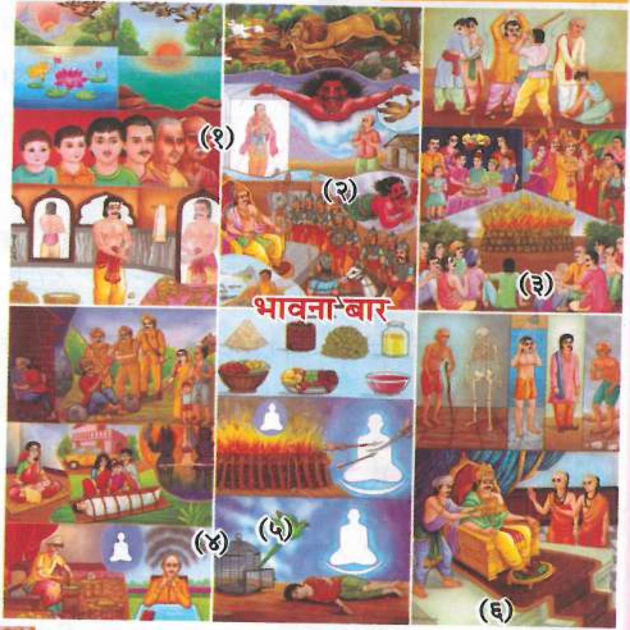

त्रीसमे बोले—भावना बार—

(१) अनित्य भावना,
(२) अशरण भावना,
(३) संसार भावना,
(४) अेकत्व भावना,
(५) अन्यत्व भावना,
(६) अशुचि भावना,

(७) आश्रव भावना,
(८) संवर भावना,
(९) निर्जरा भावना,
(१०) लोकस्वरूप भावना,
(११) बोधि भावना,
(१२) धर्म भावना।

(जेमां आत्माना प्रशस्त (सारा) भावो प्रगट थाय तेने **भावना** कहे छे।)

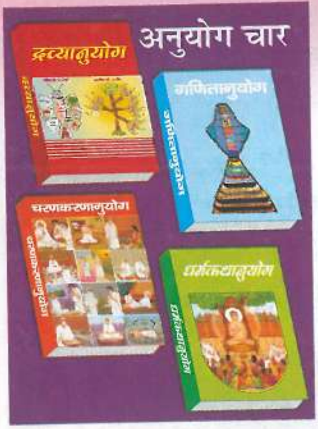

अेकत्रीसमे बोले*—अनुयोग चार— (१) द्रव्यानुयोग, (२) गणितानुयोग, (३) चरणकरणानुयोग, (४) धर्मकथानुयोग।

(वस्तुनां विशेष स्पष्टीकरणने **अनुयोग** कहे छे।)

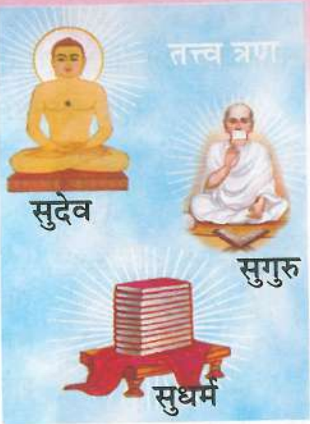

बत्रीसमे बोले—तत्त्व त्रण—(१) देव, (२) गुरु अने, (३) धर्म।

तेत्रीसमे बोले#—समवाय पांच— (१) काळ, (२) स्वभाव, (३) नियति, (४) कर्म (पूर्वकृत) (५) पुरुषार्थ (उद्यम)

(जेना समन्वयथी कार्य थाय ते **समवाय** छे।)

चोत्रीसमे बोले—पाखंडीना ३६३ भेद—(१) क्रियावादीना १८०, (२) अक्रियावादीना ८४, (३) विनयवादीना ३२, (४) अज्ञानवादीना ६७।

(जे मोक्षमार्गने वीतराग वाणीथी ओछुं, अधिक अने विपरीत माने तेने **पाखंडी** कहेवाय।)

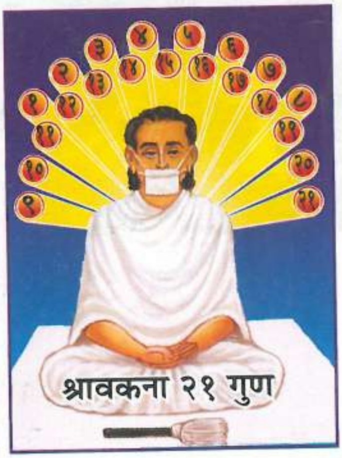

पांत्रीसमे बोले—श्रावकना २१ गुण—(१) अक्षुद्र, (२) यशवंत, (३) सौम्य प्रकृतिवाळो, (४) लोकप्रिय, (५) अक्रूर, (६) पापभीरु, (७) श्रद्धावंत, (८) चतुराई युक्त, (९) लज्जावान, (१०) दयावंत, (११) माध्यस्थ दृष्टि, (१२) गम्भीर, (१३) गुणानुरागी, (१४) धर्मोपदेश करनार, (१५) न्यायपक्षी, (१६) शुद्ध विचारक, (१७) मर्यादायुक्त व्यवहार करनार, (१८) विनयशील, (१९) कृतज्ञ, (२०) परोपकारी, (२१) सत्कार्यमां सावधान।

(श्रावक पर्यायने प्राप्त करवा जे जे विशिष्ट आचरण प्रगट करवा पडे अथवा जे सहजताथी प्रगट थाय, तेने **गुण** कहे छे।)

---

* **बोल-३१—(१) द्रव्यानुयोग**—जीव, अजीव, चैतन्य, कर्म आदि द्रव्यना स्वरूपनुं जे आगममां वर्णन होय ते। **(२) गणितानुयोग**—जेमां क्षेत्र, पहाड, नदी, देवलोक आदिना गणितना मापनुं वर्णन होय ते, **(३) चरणकरणानुयोग**—जेमां साधु, श्रावकना आचार, क्रियानुं वर्णन होय ते, **(४) धर्मकथानुयोग**—जेमां धर्म संबंधी कथा होय ते।

बोल-३३—क्रियावादी—ते क्रियाने माने, ज्ञानने माने नहि। **अक्रियावादी**—क्रियाने न माने। **विनयवादी**—बधानो विनय करवानुं माने। **अज्ञानवादी**—अज्ञानमां ज सुखने माने।

पाठ : 2 फटाकडां : समय, शक्ति अने संपत्तिनो व्यय

तहेवारो बे प्रकारना छे। लौकिक अने लोकोत्तर।

आत्माने धर्म करवामां जागृत करे तथा आत्मानुं पोषण करवामां जोडे ते **लोकोत्तर** तहेवार छे।

आत्माने पांच इन्द्रियना विषयमां अने १८ पापना कार्यमां जोडे ते **लौकिक** तहेवार छे।

दिवाळी, लग्न, क्रिकेट जेवां प्रसंगोओ फटाकडा फोडी आनंद मेळववाना प्रयत्नमां जीवो समय, शक्ति अने संपत्तिनो व्यय करे छे, **पण तेवुं करतां पहेलां तेनां नुकशानोने जाणी लो....!**

(१) फटाकडांमां गंधक (पृथ्वीकाय) वपराय छे। तेने कागळमां भरवामां आवे छे। आ कागळ वनस्पतिने भींजवीने बनाववामां आवे छे। फटाकडां बनावतां के फोडतां तेनी दुर्गंध, प्रकाश अने अवाजथी **अग्नि, वायु अने नाना मच्छर आदि जीवोनो नाश** थाय छे।

(२) सळगतां **फटाकडां** माटी पर पडतां **पृथ्वीकायनी,** पाणीनां टांका, पीप के गटर पर पडवाथी **अप्कायनी,** बळवाथी **अग्निकायनी,** हवाने अग्नि लागवाथी **वाउकायनी,** झाड के घास पर पडवाथी **वनस्पतिकायना जीवोनी हिंसा** थाय छे।

(३) अचानक फटाकडांनो अवाज थतां कबूतर, चकलीनां **इंडां फूटे,** पक्षीओ अंधारांमां अथडाय, तेथी तेमना इंडा फूटी जाय तेथी ते दु:खी थाय। इलेक्ट्रिक वायर पर बेसतां, शोक लागतां **पक्षी गंभीर रीते मरे।**

(४) फटाकडांना झेरी धूमाडाथी **फेफसां बगडे, प्रदूषण वधे।** कानमां **बहेराश आवे,** गभरामणथी **हार्टअेटेक** आवे, गळा वगेरेना रोगो थाय।

(५) सळगतो फटाकडो जो रू नी गांसडी, लाकडानी वखार, झूंपडा पर के पक्षीना माळामां पडे तो **आग लागे,** हजारो के लाखो **माणस कमोते मरे** अने घर वगरनां थई जाय। लाखो **रूपियानुं नुकशान** थाय। पशु, पक्षी के मनुष्य दाझी पण जाय छे।

(६) अक्षर बळवाथी **ज्ञानावरणीय** कर्म, जीवोनां अंगोपांग नाशथी **दर्शनावरणीय** कर्म, जीवोने दु:ख अने पीडा थवाथी **अशातावेदनीय** कर्म, आनंद माणवाथी **मोहनीय** कर्म, जीवोनां नाशथी नरक अने तिर्यंचनुं **आयुष्य** कर्म, शरीर नाशथी **अशुभ नाम** कर्म, संपत्तिनुं अभिमान करवाथी **नीच गोत्र** कर्म, सुखशांतिमां खलेल पहोंचाडवाथी **अंतराय कर्मनो** बंध थाय छे।

(७) दया अने **परोपकारना संस्कार नाश** पामे। **पुण्यनो नाश** थाय अने **पापनो बंध** थाय।

हुं जैन छुं माटे प्रतिज्ञा करुं छुं के फटाकडां फोडवानी आवी पापकारी अने हिंसक प्रवृत्ति करीश नहि, करावीश नहि अने तेनी अनुमोदना करीश नहि।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) फटाकडां फोडवाथी ८ कर्म केवी रीते बंधाय? (२) फटाकडांथी छकायनी हिंसा केवी रीते थाय? (३) फटाकडांथी कया रोगो थाय? (४) फटाकडांथी कई कई नुकशानी थाय? (५) फटाकडांथी कबूतरने शुं नुकशान थाय?

पाठ : 3 टी. वी. अेक दूषण

टी.वी. वर्तमान युगमां अनर्थोनी परंपरा ऊभी करनारां अनेक साधनोमांथी अेक साधन छे। आ रह्यां टी. वी. जोवाथी थतां नुकसानो...!

(१) शारीरिक नुकशान—आंखने चश्मा आववाथी आंखनुं केन्सर सुधीना अनेक रोगो थाय छे। शरीर पर तेनां किरणोनी असर थवाथी पण केन्सर थाय छे।

(२) टी.वी. जोवाथी **समयनी बरबादी** थाय छे। जैनशाळा तथा निशाळना अभ्यास पर ध्यान देवातुं नथी, तेथी ज्ञानमां बाधा पडे छे। माता-पिता, वडीलोनो विनय करवाना संस्कार आवता नथी। साचा धर्मना संस्कारना अभावे जीव दुर्गतिमां जाय छे।

(३) सिनेमाना हीरो-हीरोईननी नकल करवाथी **पैसानो तेम ज सभ्यतानो** नाश थाय छे। विचारो बगडे छे। दिवस-रात खराब विचार आवे छे, तेथी नजीवा कारणमां पण झघडा, कंकास अने दुश्मनावट ऊभी थाय छे।

(४) टी.वी., सिनेमाना कलाकारो माटे मांस, **माछली, इंडा, वगेरे अभक्ष्य वस्तुओनो उपयोग करवामां आवे छे। आपणे ते वस्तुओ खाता नथी, छतां पण तेनी हिंसानी अनुमोदनानुं भयंकर पाप** आपणने लागे छे।

(५) टी.वी.ना कार्यक्रमोनुं आयोजन करवा माटे स्टूडियो बांधवाथी **पृथ्वीकायना जीवोनी हिंसा** थाय छे। नदी, सरोवर, स्विमिंग पुल, समुद्र, पर्वत, बगीचा आदि कुदरती सौंदर्यनां दृश्यो बताववा माटे **पाणी तथा वनस्पतिना जीवोनी हिंसा** थाय छे। टी.वी. जोवा माटे जे वीजळीनी जरूर पडे छे, ते पाणीना धोधमांथी उत्पन्न कराय छे। ते धोधमां माछलां, पोरां, मगरमच्छ वगेरे **त्रसजीवो** होवाथी तेमनी हिंसा थाय छे। आ बधी भयंकर हिंसाना पापना आपणे जाण्ये-अजाण्ये भागीदार बनीअे छीअे।

(६) टी.वी.मां आवतां मारामारी, खून, फांसी वगेरे दृश्यो जोतां वखते जोनारां सहु खुश थईने ताळी पाडे, सीटीओ वगाडे, मनमां आनंद पामे त्यारे **सामुदायिक कर्म बंधाय छे। जेनां फळ रूपे रेलवे-प्लेन-बस अकस्मात, धरतीकंप, वावाझोडुं वगेरे आपत्तिओमां ते जीवो एकसाथे मृत्यु पामे छे।**

समजूती : हुं आत्मा छुं, मारामां अनंतु सुख रहेलुं छे। जगतनी कोईपण वस्तुमां मने सुखी बनाववानो स्वभाव नथी। पांच इन्द्रियना २३ विषयमां सुख होतुं नथी, छे नहि अने होई शके नहि।

हृदयमां आ श्रद्धा मजबूत करी चालो, आपणे आजथी टी.वी. जोवानो संपूर्ण त्यागनो नियम करी, आपणो आत्मा, घर अने समाजने दूषणथी बचावीओ।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) टी.वी.नां शारीरिक नुकशान कया? (२) टी.वी.थी हिंसानी अनुमोदनानुं पाप केवी रीते लागे? (३) टी.वी. थी छकायनी हिंसा कई रीते थाय? समजावो। (४) सामुदायिक कर्मनुं फळ शुं? (५) टी.वी.नी नुकशानीओ टूंकमां लखो। कोईपण त्रण।

पाठ : 3 जैनधर्म अे ज श्रेष्ठ धर्म

(१) वस्तुना स्वभावने **धर्म** कहे छे। जगतमां रहेला अनेकविध धर्ममां जैन धर्मनुं अनेरुं स्थान छे।

(२) जैनधर्म **केवळज्ञानीओअे** बतावेल छे। तेओ राग, द्वेष रहित अने त्रणे काळनां सर्व भावोनां जाणनार होय छे।

(३) **पृथ्वी, पाणी, अग्नि, वायुमां जीव छे,** तेवुं अेक मात्र जैनधर्म माने छे, अन्य नहि।

(४) नव तत्त्व, सुदेव, सुगुरु, सुधर्मनुं सत्य स्वरूप जैन धर्ममां बताव्युं छे।

(५) अन्य धर्म कहे छे '**जीवो अने जीववा दो।**' ज्यारे **जैन धर्म कहे छे—'जीवो अने जीववा दो तमे कष्ट सहीने पण बीजाने जीववा दो।**' Live and let live, Co-operate to live others.

(६) अन्य धर्मो फक्त नरक अने स्वर्गने माने छे तथा स्वर्ग अने मोक्षने अेक ज माने छे। ज्यारे जैनधर्म **स्वर्ग अने मोक्षने अलग माने छे** तथा **दरेक जीव परमात्मा थई शके छे** तेवुं समजावी मोक्षमां जवानो मार्ग बतावे छे।

(७) जे धर्म आत्माने कर्म रहित बनावी मोक्ष अपावे ते ज श्रेष्ठ धर्म छे।

तेथी जैनधर्म अे ज श्रेष्ठ धर्म छे।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) जैनधर्म कोणे बतावेल छे? (२) धर्म अेटले शुं? (३) जैनधर्ममां शेमां शेमां जीव छे तेम बताव्युं छे? (४) श्रेष्ठ धर्म कयो? (५) मोक्षे जवानो मार्ग कयो धर्म बतावे छे?

पाठ : 5 द्वेषनुं स्वरूप–मान अने क्रोध

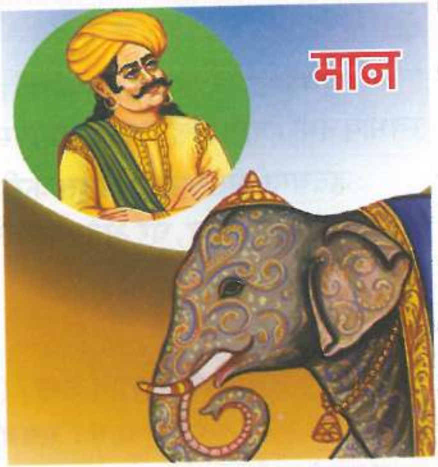

मान एटले अभिमान :

अभिमान कोईनुं क्यारेय कायम टकतुं नथी।

अभिमानी पोतानी प्रशंसाथी फुलणशी बनी जाय छे।

अभिमान करनार पोताना मित्रोनो प्रेम गुमावे छे।

- मनगमती चीज–वस्तुओ मळी जाय त्यारे, आवी वस्तुओ मारी पासे ज छे, बीजानी पासे नथी, तेवो अहंकार–अभिमान क्यारेक जागे छे।
- मारा मित्रो करतां तमारी पासे कांईक विशेष छे, तेवुं बतावता तमे अभिमानी बनी जाव छो।
- कोईने सुंदरतानुं अभिमान आवी जाय छे।
- कोईने परीक्षामां वधारे मार्कस मळी जाय त्यारे अभिमान आवी जाय छे।
- कोईने पैसा या मनगमती चीज–वस्तु मळी जाय त्यारे अभिमान आवी जाय छे।
- आवा अभिमानने कारणे तमारा साचा मित्रो तमाराथी दूर भागता रहे छे।
- केटलाक कहेवाता मित्रो तमने मस्को मारीने, खुशामत करीने तमारा अभिमानने वधारे फुलावे छे।
- आवा लोको ज तमारी पाछळ तमारी निंदा करतां होय छे, तेथी अभिमानीने नुकशान पहोंचे छे।
- खुशामत हंमेशां स्वार्थ भरेली होय छे अने अप्रामाणिक होय छे। प्रशंसा हंमेशां प्रामाणिक होय छे।
- नम्रता राखवाथी अभिमान दूर थाय छे ते माटे–

  १) तमाराथी कोई सुंदर होय तो तेनी सुंदरतानी प्रशंसा करो।

  २) तमाराथी कोई वधारे होशियार होय तो तेनी आवडतनी प्रशंसा करो।

  ३) प्रशंसा करवाथी तमने साचा मित्रो मळे छे।

  सामी व्यक्तिमांथी साचा गुणो शोधी काढीने तेना वखाण करवा, तेने **प्रशंसा** कहे छे। साचा गुणोनी प्रशंसा करवाथी आपणामां ते गुणो आवे छे।

- प्रशंसाने धर्मनी भाषामां 'गुणानुराग' कहे छे।
- बाळको नीचेनुं सूत्र याद राखीने हंमेशां तेनुं रटण करजो।
- '**नम्रता**' राखीने हुं '**मान**' नो नाश करीश।

क्रोध अेटले गुस्सो :

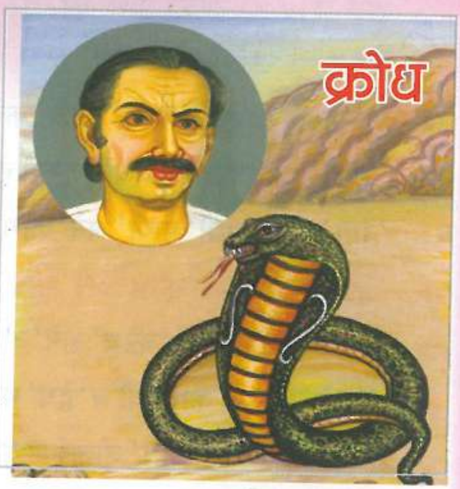

क्रोधी—गुस्साने कारणे पोतानी तंदुरस्ती गुमावे छे।

क्रोधी—गुस्साने कारणे वेर-झेर ऊभा करे छे।

क्रोधी—गुस्साना आवेशमां क्यारेक हत्या पण करी बेसे छे।

- छेतरपिंडी करतां पकडाई जईअे त्यारे आबरू जाय छे अने आपणने गुस्सो आवे छे। आपणी साथे कोई छेतरपिंडी करे त्यारे पण गुस्सो आवे छे।
- आपणुं धार्युं न थाय, आपणुं जोईतुं न मळे त्यारे गुस्सो आवे छे।
- अभिमान करीने कोईनी ऊपर 'रोफ' पाडवा जईअे अने कोई आपणने गणकारे नहि त्यारे गुस्सो आवे छे। कोई अभिमानथी आपणी ऊपर 'रोफ' करे त्यारे गुस्सो आवे छे।
- 'ईर्षा-अदेखाई' थी पण क्यारेक गुस्सो आवे छे। कोईने आपणा करतां परीक्षामां वधारे मार्कस मळे, रमतगमतमां आपणाथी शक्तिशाळी होय तेनाथी हारी जईअे, कोई आपणा करतां वधारे होशियार होय अने तेने केप्टन के मोनिटर बनावाय, आवां कारणोथी आपणने ईर्षा-अदेखाई आवे त्यारे गुस्सो आवी जाय छे।
- '**गुणानुरागी**' थवाथी '**ईर्षा-अदेखाई**' ने जीती शकाय छे।
- गुस्साना आवेशमां लोको गाळो बोले छे, मारामारी करे छे अने क्यारेक हिंसा करी बेसे छे।
- जे सामा माणसनी लागणी दुभवे, दु:खी करे, तेने पण भगवाने हिंसा कही छे।
- गुस्सो करनार लोको साथे संबंध बगाडे छे, अने वेर-झेर ऊभा करी लोकोने दुश्मन बनावे छे।
- गुस्सानो आवेश ऊतरी जाय त्यारे पस्तावो थाय छे, पण त्यारे तो गुस्सानुं पाप थई गयुं होय छे।
- पापनो समय चालतो होय त्यारे कोई निमित्त बनी आपणने छेतरी जाय। कोई निमित्त बनी आपणुं अपमान करे, कोई निमित्त बनी आपणने पीडा आपी दु:खी करे।
- आवा प्रसंगोअे आपणे निमित्तोने दोषीत मानी तेमनी उपर गुस्सो करीअे छीअे।
- सत्य हकीकत अे छे के आपणे ज करेलां पाप आपणे भोगववां पडे छे। आपणने दु:खी करनार निमित्तो तो मात्र कारणरूप छे।
- निमित्तोने क्षमा आपवी जोईअे।
- गुस्साना आवेशथी गुस्सो करनारने ज नुकसान थाय छे। (१) गुस्साथी आंखो अने मोढुं लाल थई जाय छे। (२) शरीर ध्रूजवा मांडे छे। (३) क्यारेक ब्लडप्रेशर वधी जाय छे अथवा 'हार्ट-अेटेक' आवी

शके छे। (४) लोको साथे 'वेर-झेर' ऊभा थाय छे। (५) मित्रो दूर भागे छे। (६) गुस्सो करनारने कोई प्रेम करतुं नथी।

- 'गुस्सा' ने धर्मनी भाषामां '**क्रोध**' कहे छे।
- 'राग' ने जीतवो सौथी वधारे जरूरी छे।
- 'राग'ना कारणथी 'माया' अने 'लोभ' थाय छे।
- 'द्वेष'ना कारणथी 'क्रोध' अने 'मान' आवे छे।
- 'लोभ' अने मायाथी 'क्रोध' अने 'अभिमान' आवे छे।
- अेटले 'राग' ना कारणथी ज 'द्वेष' थाय छे।
- 'राग'ने जीतवाथी 'द्वेष' जीताई जाय छे।
- बालको नीचेनुं सूत्र याद राखीने हंमेशां तेनुं रटण करजो।
- '**क्षमा**' राखीने हुं '**क्रोध**' नो नाश करीश।

आ चार कषायोने जीते तेने परमात्मा कहे छे।

- अरिहंत अने सिद्ध आपणां परमात्मा हंमेशां 'समता-भाव' मां रहे छे। तेओअे रागद्वेष अने कषायोने संपूर्ण रीते जीती लीधा छे, तेथी तेमना मुख पर शांति, आनंद अने प्रसन्नता जोवा मळे छे।
- तेओ अहिंसक होवाथी तेमनी आंखोमां जगतना सर्व जीवो माटे दया-अनुकंपा अने करूणा जोवां मळे छे।
- रागद्वेषने संपूर्णपणे तेओअे जीती लीधा होवाथी आखा जगतनुं तेमने ज्ञान छे, तेने '**केवळज्ञान**' कहे छे।
- '**केवळदर्शन**'**थी** तेओ आखा जगतने जोई शके छे। जोवा माटे आंखनी जरूर पडती नथी।

अपेक्षित प्रश्नो

(१) द्वेषना केटला भेद? कया? (२) अभिमान क्यारे क्यारे आवे छे? (३) अभिमानथी शुं नुकशान थाय? (४) अभिमान दूर करवा शुं शुं करवुं? (५) प्रशंसानुं बीजुं नाम शुं? (६) क्रोध क्यारे क्यारे आवे छे? (७) क्रोधथी शुं नुकशान थाय? (८) क्रोध दूर करवा शुं करवुं? (९) केवळज्ञान अेटले शुं? (१०) केवळदर्शन अेटले शुं? (११) अरिहंते शुं जीत्युं छे?

महाराजा मेघरथ

जंबूद्वीपना पूर्व महाविदेहक्षेत्रमां **पुष्पकलावती** नामनी विजयमां **सीता** नदीना किनारे **पुंडरिकिणी** नामनी नगरी हती। **धनरथ** नामे महाबली राजा त्यां राज्य करतो हतो। तेनी **प्रियमती** अने **मनोरमा** आ बे महाराणीओ हती। ते राणीओना अेक अेक दीकरा हता। तेमनुं नाम '**मेघरथ**' अने '**दृढरथ**' हता। बंने भाईओने अेकबीजा पर बहु प्रेम हतो।

मेघरथ युवान थतां तेमना लग्न **सुमंदिरपुरना राजा निहतशत्रुनी दीकरीओ 'प्रियमित्रा' अने 'मनोरमा' साथे थया।** समय जतां राजा धनरथे युवराज मेघरथने राजा बनावी तथा दृढरथने युवराजनी पदवी आपीने पोते जैन दीक्षा लीधी। महाराजा मेघरथ नीति अने न्यायपूर्वक राज्यसंचालन करता हता। अनेक राजाओ तेमनी आज्ञामां रहेता हता।

अेक दिवस महापराक्रमी अने दयासागर महाराजा मेघरथ पौषधशाळामां पौषध अंगीकार करीने बेठा हता अने जिनप्ररूपित धर्मनुं व्याख्यान आपी रह्या हता। ते समये अेक भयभीत कबूतर आवीने तेमना खोळामां बेसी गयुं। ते खूब ज गभरायेलुं हतुं अने ध्रूजी रह्युं हतुं। तेनुं हृदय जोरजोरथी धबकी रह्युं हतुं। ते मनुष्यनी बोलीमां बोल्युं, "मने अभयदान आपो, मने बचावो।" आ सांभळीने राजाअे कह्युं, "तुं निर्भय थई जा, अहीं तने कोई प्रकारनो भय नहि रहे।" तेथी कबूतरने मनमां खूब ज शांति थई।

थोडी क्षण पछी अेक बाज पक्षी आव्युं अने कबूतरने राजाना खोळामां बेठेलुं जोईने मानव भाषामां बोल्युं, "महाराज! आ कबूतरने छोडी दो। आ मारो खोराक छे। हुं अेने ज शोधतो शोधतो अहीं आव्यो छुं।" महाराजा मेघरथे बाजने समजावतां कह्युं। "अरे बाज ! हवे आ कबूतर तने मळी शकशे नहि, अे मारा शरणमां छे। क्षत्रिय पुत्र शरणे आवेलानी रक्षा करे छे। तारे पण आवुं हिंसानुं काम न कराय। तुं मांसभक्षण करे छे, परंतु अे तने लाखो वर्षोनुं नरकनुं दुःख आपशे। जो तारे भूख मटाडवी होय तो तने बीजुं सारुं सारुं भोजन मळी शकशे।"

"महाराजा! आप विचारो। जे रीते आ कबूतर मृत्युना भयथी बचवा आपनी पासे आव्युं छे, तेम हुं पण भूखथी पीडाईने आवुं छुं। मारुं जीवन केवी रीते बचावुं? आप कबूतरनी रक्षा करो छो तो मारी पण रक्षा करो। मने भूखथी तरफडीने मरतो बचावो। आ कबूतर मारुं भक्ष्य छे। हुं ताजुं मांस ज खाऊँ छुं। अेनाथी ज मने संतोष थाय छे। माटे आप कबूतर मने सोंपी दो।" बाजे पोतानी रजूआत करी।

"शुं तुं मांस ज खाय छे? बीजुं कांई खाई शकतो नथी? जो आम ज होय ते ले हुं तारी इच्छा पूरी करवा तैयार छुं। आ कबूतरना मांस जेटलुं मारा शरीरनुं ताजुं मांस हुं तने आपुं छुं, ते खाई तारी इच्छा पूरी कर।" महाराजा मेघरथजीअे धीरज अने शांतिपूर्वक कह्युं।

बाजे राजानी वात स्वीकारी लीधी। **राजाअे छरी अने त्राजवुं मंगाव्युं। त्राजवाना अेक पल्लामां कबूतरने बेसाडयुं अने महाराज पोताना शरीरनुं मांस कापीने बीजा पल्लामां मूकवा लाग्या।** आ जोईने राज्यमां अने परिवारमां हाहाकार फेलाई गयो।

राणीओ अने राजकुमारो वगेरे आक्रंद करवा लाग्यां। मंत्रीओ, सामंतो अने मित्रो राजाने आवुं न करवा विनववा लाग्या। महाराजा मेघरथ पोताना हाथेथी पोताना शरीरनुं मांस कापीने त्राजवामां मूकवा लाग्या। परन्तु कबूतरनुं पल्लुं ऊंचुं थयुं ज नहि। तेओ छराथी पोतानुं मांस कापीने मूकतां जतां अने लोको रडतां जतां हतां। परन्तु कबूतरनुं पल्लुं भारे ज रह्युं। शरीरना केटलाय भागोनुं मांस कापी कापीने मूकी दीधुं

आ दृश्य जोईने अेक मंत्री बोल्या "महाराजा! आ दगो छे। कोई मायावी शत्रुदेव षडयंत्र रचीने आपनुं जीवन खतम करवा इच्छे छे। जो आम न होत तो आटलुं बधुं मांस मूकी दीधा पछी पण कबूतरनुं पल्लुं भारे केवी रीते रहे?"

मंत्रीअे आ प्रमाणे कह्युं त्यां ज अेक दिव्य मुगट-कुंडल वगेरे आभूषणधारी देव प्रगट थयो अने महाराजानो जयजयकार करतो बोल्यो, "जय थाओ, विजय थाओ। शरणागत रक्षक महामानव राजा मेघरथनो जय थाओ। आपनी गुणगाथा तो बीजा देवलोकमां ईशानेन्द्र द्वारा थई रही हती। हुं पण ते देवसभामां हतो। मने आपनी प्रशंसा सांभळीने विश्वास न आव्यो, माटे परीक्षा करवा अहीं आव्यो।

मार्गमां आ बे पक्षीओने लडतां जोईने हुं तेओमां प्रवेश करीने आपनी पासे आव्यो अने आपनी महान अनुकंपा, शरणागतनी सुरक्षा तथा दृढ आत्मबळनी परीक्षा करी। मारा आ कार्यथी आपने कष्ट थयुं, तेथी हुं आपनी क्षमा मागुं छुं। मने आप क्षमा आपो।" आम माफी मांगी मेघरथराजाने पहेलाना जेवा ज स्वस्थ बनावी ते देव पाछो फरी गयो।

समय जतां ग्रामानुग्राम विचरण करतां मेघरथना पिता तीर्थंकर धनरथजी राजा मेघरथना गाममां पधार्या। तेमनी वाणी सांभळीने वैराग्य थतां राजा मेघरथे पण दीक्षा लीधी। विशुद्ध संयम अने उग्र तप करतां करतां तेमणे अेक लाख पूर्व वर्ष सुधी दीक्षा पाळी अने तीर्थंकर नाम गोत्रकर्म उपार्जी सर्वार्थसिद्ध विमानमां देव तरीके उत्पन्न थया।

३३ सागरनुं आयुष्य भोगवी सर्वार्थसिद्ध विमानमांथी च्यवीने (नीकळीने) महाराजा विश्वसेननी प्रिय राणी अचिरादेवीनी कुक्षिमां उत्पन्न थया। तेओ गर्भमां आवतां ज राज्यमां मरकीनो रोग थयो हतो, ते शांत थई गयो। तेथी तेमनो जन्म थतां तेमनुं नाम 'शांतिनाथ' राखवामां आव्युं। मोटा थई तेओ जैनोना सोळमां तीर्थंकर श्री शांतिनाथ स्वामी बन्या।

धन्य हो राजा मेघरथनी अहिंसा भावनाने!

अपेक्षित प्रश्नो

(१) मेघरथनां लग्न कोनी साथे थयां? (२) महाराजा मेघरथना खोळामां कबूतर आव्युं पछी शुं बन्युं? (३) कबूतरने बचाववा राजाओ शुं कर्युं? (४) महाराजानी प्रशंसा क्यां थई हती? (५) राजानी अहिंसाभावना टूंकमां वर्णवो। (६) मेघरथ मरीने क्यां गया? भविष्यमां ते आपणा शुं बन्या?

कथा : 2 रोहिणेय चोर

राजगृही नामनी अेक सुंदर अने वैभवशाळी नगरी हती। ते नगरीनी पासे **वैभारगिरि** पर्वत हतो। आ पर्वतनी गुफामां **रोहिणेय** चोर पोतानी चोरटोळी साथे रहेतो हतो। रोहिणेय चोरीनो धंधो पोताना पिता पासेथी शीख्यो हतो। साथे साथे बीजी अनेक विद्याओ शीखवाथी ते बुद्धिमान पण हतो।

रोहिणेय चोरे पोताना चोर पिताने तेमना मृत्यु वखते अेक वचन आप्युं हतुं के 'रोहिणेय पोते महावीर प्रभुनी वाणी कदी पण नहि सांभळे।'

पिताना मृत्यु बाद ते राजगृही नगरीमां जईने मोटी मोटी चोरी करतो अने लोकोने खूब रंजाडतो। दिवसे दिवसे तेनो त्रास वधवा लाग्यो। ते अेटलो बधो चालाक अने चपळ हतो के ते राजाना सिपाहीओने हाथे पकडातो न हतो।

प्रजाजनोओे श्रेणिक महाराजाने चोरीनी फरियाद करी अने चोरना त्रासमांथी सहुने शीघ्र छोडाववा विनंती करी। चोरने बुद्धिशाळी अने चबराक जाणीने राजाओ तेने पकडवानुं काम पोताना पुत्र अने राज्यना मंत्री **अभयकुमारने** आप्युं। मंत्रीओ नगरना दरवाजा पर सख्त पहेरो गोठवी दीधो अने कोई नवो माणस दाखल थाय के बहार नीकळे तो तेनुं खास ध्यान राखवा कही दीधुं। सिपाहीओ अने नगरनो कोटवाल छूपी रीते दरवाजा पर ध्यान राखता थई गया।

रोहिणेय चोरने पण अभयकुमारे गोठवेली व्यवस्थानी जाणकारी तेना माणसो पासेथी थई गई। तेणे अभयकुमारने पण छेतरवानो निश्चय कर्यो। ते माटे ते योग्य समयनी राह जोतो रह्यो।

अेक वखत, श्री महावीर प्रभु विहार करतां करतां राजगृही नगरीमां पधार्या अने नगरीनी बहारना उद्यानमां बिराज्या। प्रभु नगरीनी बहार पधार्या छे तेवुं जाणीने नगरजनो तेमनां दर्शन करवां अने उपदेश सांभळवां उद्यानमां भेगा थयां। महावीर प्रभुने वंदन करीने सौ नगरजनो तेमनी पवित्र, मीठी, आनंदकारी वाणी सांभळवा बेठा। देवताओअे रचेला समवसरणमां प्रभु देशना आपवा लाग्या।

ते ज दिवसे रोहिणेय चोर पण पर्वतनी गुफामांथी नीकळीने राजगृही तरफ जतो हतो। ते नगर बहारना उद्यान पासेथी नीकळ्यो। नगरमां प्रवेश करवानो ते टूंको मार्ग हतो। बीजा रस्ते थईने जाय तो समय वधारे लागी जाय तेम हतुं। तेथी ते आ ज मार्ग पर चालवा लाग्यो।

महावीर प्रभुनी दिव्य अने तेजस्वी वाणी चालु हती। पोताना पिताने आपेलुं वचन भंग न थाय ते माटेनो मार्ग रोहिणेये विचार्यो। ते पोताना पगरखां बगलमां दबावी, बंने कानमां आंगळीओ खोसीने उद्याननी पासे जईने झडपथी दोड्यो। पण, जेवो ते समवसरणनी पासेथी नीकळ्यो त्यारे ज तेना पगमां कांटो वाग्यो।

तेणे विचार्युं के 'जो हमणां कांटो काढवा प्रयत्न करीश तो कानमां खोसेली आंगळीओ काढवी पडशे अने प्रभुनां वचनो कानमां जशे, तो पिताने आपेलुं वचन तूटी जशे। अेटले कांटावाळा पगे ज तेणे दोडवानुं चालुं राख्युं। परंतु कांटो पगमां जोरथी वाग्यो हतो अने पगमां खूब पीडा थती हती, तेथी हवे तेनाथी सहेज पण दोडाय तेम न हतुं। पगमांथी कांटो काढवा नाछूटके तेने कानमांथी आंगली काढीवा नीचे नमवुं पड्युं।

ते वखते प्रभु देवताओना स्वरूपनुं वर्णन करता हता। तेमना मुखमांथी नीकळती अमृत समान वाणीनां वचनो तेना कान पर पड्यां। "(१) देवोनो श्वासोच्छ्‌वास सुगंधवाळो होय छे। (२) तेमना डोकनी माळाओ करमाती नथी। (३) तेमनी आंखो अपलक ज रहे छे। (४) तेओ जमीनथी चार आंगळ अध्धर ज रहे छे, अेटले के तेमना पग जमीनने स्पर्शता नथी।" आटला वाक्यो तेना कानमां पड्यां बाद रोहिणेय पगनो कांटो काढी नांखीने, कानमां आंगळां खोसीने झडपथी आगळ दोडी गयो। महावीर प्रभुनां वचनो जे तेना काने पडेला तेने भूली जवा तेणे घणो प्रयत्न कर्यो, पण ते भूली शक्यो नहि।

तेना खराब नसीबे ते दिवसे तेने नगरमां प्रवेश करती वखते कोटवाले पकडी लीधो अने बांधीने श्रेणिक राजा पासे लई आव्यो। अभयकुमारने पण बोलाववामां आव्या। अभयकुमारे कोटवालने पूछ्युं, "चोर पासेथी चोरेली वस्तु हाथ आवी छे? नक्कर साबिती विना तेने शिक्षा थई शके नहि।" कोटवाले कह्युं, "अमे तो तेने नगरमां दाखल थतां ज शकना आधारे पकडी लीधो छे, तेथी तेनी पासेथी कांई मळ्युं नथी।" राजा श्रेणिके चोरने पूछ्युं, "तारुं नाम शुं छे? तुं क्या गाममां रहे छे?" चोरे जवाब आप्यो, "मारुं नाम दूर्गचंड

छे, हुं शालिग्राममां रहुं छुं।" राजाअे आगळ पूछ्युं, "तुं शो धंधो करे छे?" चोरे कह्युं, "हुं जाते कणबी छुं। खास काम माटे अहीं आव्यो छुं। मने आवतां मोडुं थयुं अेटले कोटवाले मने पकड्यो।" राजाअे शालिग्राममां तपास करावी पण त्यां चोरना ज माणसो होवाथी जेवुं चोरे कहेलुं तेवुं ज वर्णन गामलोकोअे पण कह्युं।

अभयकुमार मंत्रीअे विचार्युं के 'आ चोर घणो ज होंशियार छे, अेटले बुद्धिथी काम लेवुं जोईअे। आथी तेमणे चोरने कह्युं, "भाई, तुं गभराईश नहि। थोडा दिवस तुं मारी साथे ज मारो महेमान बनीने रहेजे।" अेम कहीने चोरने तेणे पोतानी साथे राख्यो।

अभयकुमार मंत्री होवा छतां श्रावकनां व्रतोनुं चुस्तपणे पालन करता हता। तेओ रोज सामायिक पण करतां। पर्व तिथिअे, पौषध आदि विशेष धर्म आराधना करता। रोहिणेय पण तेमनी साथे रहीने तेमनुं अनुकरण करतो, तेथी ते चोर छे तेवो अणसार न मळ्यो।

छेवटे अभयकुमारे अेक युक्ति करी। महेलना अेक विशाल खंडमां तेमणे अनेक प्रकारना झुम्मर, चंदरवा अने धजाओ बंधावी। दरवाजे शोभायमान तोरणो लटकाव्यां। ओरडामां अगर, चंदन आदि सुगंधित द्रव्यो मुकाव्यां। शयनखंडमां सुदर रीते शणगारेली शय्या पथरावी। अत्यंत स्वरूपवान दासीओने सुंदर शणगार सजावी, तेमने हाथमां मृदंग अने वाजिंत्रो आपी ते ओरडामां ऊभी रखावी। आ बधुं जाणे साक्षात् देवलोकने धरती पर उतार्युं होय तेवुं लागतुं हतुं।

अभयकुमारे रोहिणेयने ते दिवसे विविध प्रकारनी स्वादिष्ट, रुचिकर अने सुगंधी वानगीओ जमाडी। पछी भोजनमां नशो करे तेवी मदिरा (दारू) पिवडावी दीधी। मदिरापानथी रोहिणेयने खूब नसो चड्यो अने ते घसघसाट निद्रामां पडी गयो। ते वखते तेने महेलना पेला शणगारेलां ओरडामां शय्या पर सुवडावी दीधो।

थोडा वखत पछी चोरने भान आव्युं अने आश्चर्यथी ते चारे बाजु जोवा लाग्यो। जीवनमां क्यारेय न जोयुं होय तेवुं दृश्य तेनी नजर सामे खडुं हतुं। ते वखते देवी जेवी लागती दासीओने सुंदर हावभाव करीने अने मधुर स्वरोमां तेने पूछ्युं, "हे स्वामीनाथ! तमे खूब भाग्यशाळी छो, तमारो जन्म देवलोकमां थयो छे। तमे अेवां ते कयां पुण्यनां काम कर्यां छे। के जेथी अमारा स्वामी थया अने देवलोकमां उत्पन्न थया छो?" आवुं सांभळीने चोर विचारमां पडी गयो के 'में अेवां कोई पुण्य कर्यां नथी के हुं देवलोकमां उत्पन्न थाउं!' ते ज समये तेने महावीर प्रभुअे देवताओ विशे करेलुं वर्णन याद आवी गयुं। देवोनो श्वासोच्छ्वास सुगंधवाळो होय छे। तेमना गळानी माळाओ करमाती नथी। तेमनी आंखो अपलक ज रहे छे। तेओ जमीनथी चार आंगुल अध्धर ज रहे छे अेटले के तेमना पग जमीनने स्पर्शता नथी।

तेणे देवी जेवी लागती सुंदरीओनुं बारीकाईथी निरीक्षण कर्युं तो ख्याल आव्यो के 'आ स्त्रीओ तो जमीन पर पग मूकीने चाले छे, तेमनी आंखो पटपटे

छे, तेमना गळानी माळाओनां अमुक फूलो मूरझायेलां छे।' आ जोतां तेने समजाई गयुं के 'आ चालाक अभयकुमारनी तेने फसाववा माटेनी चाल छे, तेथी ज तेमणे आ खोटुं नाटक ऊभुं कर्युं छे। हवे मारे पण नाटक सामे नाटक करवुं पडशे।'

ते देवीओने कहेवा लाग्यो, "देवीओ ! में मनुष्यना भवमां दान, धर्म, पुण्य, नियम, व्रतोनुं पालन करीने अने सात मोटां व्यसनो रहित जीवन जीवीने पुष्कळ पुण्य कमाणी करी छे, तेथी ज तमारा स्वामी तरीके हुं उत्पन्न थयो छुं।" देवीओअे सामे प्रश्न कर्यो, "हे नाथ ! तमारी पुण्यकरणी तो अमे सांभळी, पण तमे कांई पाप पण कर्यां हशे, ते पण अमने तमे संभळावो...." चोरे कह्युं, "में मनुष्य भवमां केवळ धर्म ज कर्यो छे, परन्तु पाप तो अेकपण कर्युं नथी।"

रोहिणेय चोर अने दासीओ वच्चेनी आ वातो अभयकुमार गुप्त रीते सांभळता हता। तेमणे जाण्युं के आ चोर खूब बुद्धिमान छे, तेना जेवा बुद्धिमान तो को'क ज होय। श्रेणिक राजाने बधी घटनानी जाण करी अभयकुमारे चोरने छोडी मूक्यो।

छूटीने घरे पाछा फरती वखते रोहिणेय चिंतने चड्यो–'आजे तो जीवन अने मोतनी वात बनी गई ! महावीर प्रभुनी थोडीक ज वाणी मारा काने पडी तो आजे तेना सहारे अभयकुमार जेवां बुद्धिनिधान महामंत्रीना हाथमांथी आबाद बची गयो। अेटले ते वाणी मारा माटे महान उपकारक बनी गई। जो महावीर प्रभुनां आटलां वचनोथी हुं अेक भवमां बची जाऊं तो तेमनी अमृततुल्य वाणीने वधारे सांभळुं तो केटलो फायदो थाय? हुं हवे पापनो धंधो छोडीने तेमने शरणे जाउं अने दुःखोमांथी बचवानो मार्ग जाणी लउं।'

आवुं चिंतन करतो करतो ते चोर महावीर प्रभु पासे पहोंच्यो। प्रभुनां चरणोमां भावपूर्वक वंदन करीने ते बोल्यो, "हे प्रभु ! आपनी अमृतवाणीनां थोडांक शब्दोअे मारी आ जिंदगी बचावी छे, तेथी हवे ते जिंदगी आपने समर्पित करवानी भावना राखुं छुं। कृपा करीने मने सुखी थवानो मार्ग बतावो।"

महावीर प्रभुअे तेने धर्मनो मार्ग बताव्यो। श्रावकधर्म अने साधुधर्मनुं पालन करवानुं समजाव्युं अने तेमां य श्रेष्ठ अेवा साधुधर्मना पालनथी आ भव अने भवोभवनां सर्व दुःख दूर थई जाय छे ते बताव्युं। रोहिणेय चोरे भगवान पासे दीक्षा लेवानी भावना प्रगट करी अने कह्युं, "हे प्रभु ! हुं श्रेणिक राजाने मळीने पाछो आवीने आपनी पासे दीक्षा लईश।"

रोहिणेय चोर राजा श्रेणिक पासे आव्यो अने पोताना जीवनमां आवेला परिवर्तननी राजाने जाण करी. पोते नगरमांथी चोरेलुं धन ज्यां ज्यां राख्युं हतुं त्यांथी आपी दीधुं। राजा, अभयकुमार अने प्रजाजनो तेना

परिवर्तनथी खूब ज आनंदित थया। रोहिणेये पोताना कुटुंबीजनोने तथा पोताना साथीओने पण सद्बोध आप्यो। ते सहुनी रजा लई महावीर प्रभु पासे आवीने तेणे दीक्षा ग्रहण करी।

साधु जीवनमां ऊंचुं चारित्र पाळीने, जीवनना अंतिम समये संथारो करीने मृत्यु पामीने रोहिणेय देवलोकमां उत्पन्न थया।

महावीर प्रभुने मार्गे चालनार अने जीवनने अजवाळनार अे रोहिणेयने धन्य हो!

अपेक्षित प्रश्नो

(१) रोहिणेय चोरे महावीर प्रभुनी शुं देशना सांभळी? (२) रोहिणेयने फसाववा अभयकुमारे महेलना ओरडामां शुं कराव्युं? (३) रोहिणेय चोरे अभयकुमारना नाटकनी सामे केवुं नाटक कर्युं? (४) निर्दोष छूटी जवा पर रोहिणेये शुं विचारो कर्या? (५) दीक्षानो निर्णय लीधा बाद रोहिणेये शुं कर्युं? (६) अभयकुमारनी चालाकीनी जाण रोहिणेयने कई रीते थई? (७) पिताने आपेला वचनने पाळवा माटे रोहिणेये शुं कर्युं? (८) रोहिणेयने राजाअे तेनुं नाम अने गाम पूछयुं तो तेणे शुं जवाब आप्यो? (९) आ वार्ता परथी तमने शुं बोधपाठ मळ्यो?

कथा : 3 शालिभद्र

राजगृह नगरनी पासे **शालिग्राममां 'धन्या'** नामनी स्त्री रहेती हती। तेनो **'संगम'** नामे अेक पुत्र हतो। ते बंने सिवाय तेमना परिवारमां कोई न हतुं। धन्या लोकोनां काम करती अने संगम गायोने चराववानुं काम करतो हतो।

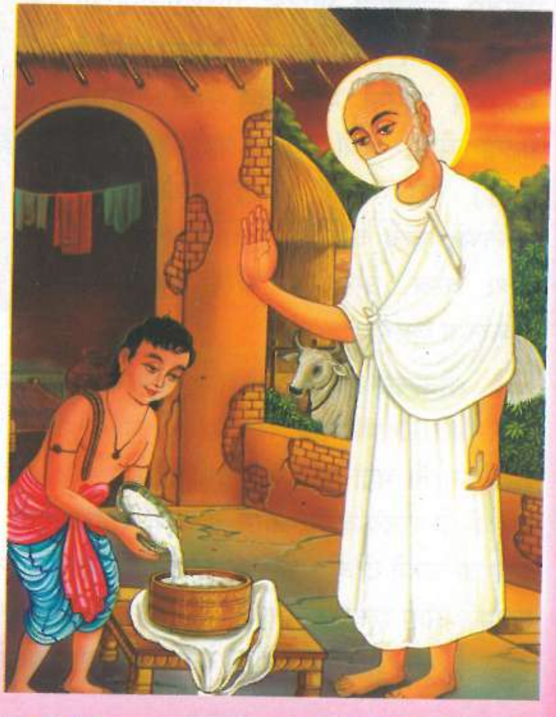

गाममां अेकवार मोटो पर्वनो दिवस होवाथी घणां लोकोना घरे खीर बनाववामां आवी हती। लोकोने खीर खातां जोईने संगमने पण खीर खावानुं मन थयुं। संगमे घरे आवीने माताने खीर बनाववा कह्युं। परंतु तेनी माता खूब गरीब होवाथी खीर बनावी शके तेम नहोती। संगमे खीर खावा माटे जीद करी, तेथी तेनी माता पोतानी गरीबीनो विचार करतां करतां जोरथी रडवा मांडी।

आजुबाजुना लोकोअे तेने रडवानुं कारण पूछतां माताअे कह्युं, "मारो दीकरो खीर खावा मांगे छे, पण हुं बहु दुर्भागी छुं, ज्यां सूको रोटलो खावा नथी मळतो त्यां खीर तो हुं क्यांथी बनावी शकुं?" पडोशमां रहेवावाळी स्त्रीओने तेना प्रत्ये करूणा उत्पन्न थई, तेथी तेमणे भेगा थईने धन्या माताने खीर बनाववानो सामान आप्यो। धन्याअे राजी थईने संगम माटे खीर बनावी अने अेक थाळीमां गरम खीर खावा आपी पोताना कामे लागी गई।

ते ज समये अेक महान तपस्वी जैन साधु मासक्षमणना (३० उपवास) पारणे धन्यानी झूंपडी जोई अने त्यां गोचरी लेवा पधार्या। संगम थाळीनी खीर ठंडी थवानी राह जोतो बेठो हतो। संगमे तपस्वी संतने जोया अने तेना हृदयमां शुभ भावो उत्पन्न थया, ते खूब आनंदित, हर्षित थयो। तेणे विचार्युं 'धन्य भाग्य मारा! मारा घरे तपस्वी जैन संत पधार्या। संत तो कल्पवृक्ष समान छे। मारा घरे आजे सोनानो सूरज ऊग्यो। सारुं थयुं के आ संत अत्यारे ज मारा घरे पधार्या। कारण के अत्यारे मारी पासे वहोराववा माटे खीर पण छे।' आ प्रकारे विचार करीने संगमे शुद्ध हृदयना भावथी खीर संतने वहोरावी दीधी अने पोताने भाग्यशाळी मानवा लाग्यो।

तपस्वी संत पाछा गया पछी थोडीवारे तेनी माता पोतानुं काम पतावीने बहारथी आवी। तेणे जोयुं के संगम बधी खीर खाई गयो छे। माटे तपेलीमांथी बचेली बीजी थोडी खीर तेने खावा आपी। संगमे खूब ज आनंद साथे खीर खाधी, परंतु तेने खीरनुं अजीर्ण (पाचन न थवुं) थतां तेना शरीरमां उग्र रोग उत्पन्न थयो। संगमनां मनमां तो तपस्वी संतने खीर वहोराववानो आनंद आनंद हतो। ते ज विचारोमां तेनुं आयु पूर्ण थई गयुं।

ते संगमनो जीव **राजगृह** नगरमां **गोभद्र सेठनी भद्रा** नामनी पत्नीनां गर्भमां उत्पन्न थयो। गर्भना प्रभावथी माताअे स्वप्नमां **पाकेली शालिनुं क्षेत्र** जोयुं, तेम ज माताने दान करवानी इच्छा पण उत्पन्न थई। माताअे शालिनुं स्वप्न जोयेलुं, तेथी पोताने उत्पन्न थयेल बाळकनुं नाम '**शालिभद्र**' राख्युं।

शालिभद्रने विद्या-अभ्यास करावीने युवान थतां योग्य समये बत्रीस सुंदर, सुशील कन्याओ साथे तेना लग्न कर्यां। सुंदर पत्नीओ प्राप्त थतां शालिभद्र रंगरागमां अने संसारना रंगमां रंगाई गया।

तेमना पिताश्री गोभद्र शेठे भगवान महावीर स्वामीनो उपदेश सांभळीने दीक्षा लीधी। तेओ तप, संयमनुं पालन करीने काळधर्म पामीने मोटा देव थया। गोभद्र शेठनो वेपार-धंधो माता भद्रा संभाळवा लागी। देव बनेल गोभद्र पोताना पुत्र शालिभद्र प्रत्ये वात्सल्यभावी होवाथी रोज दिव्य वस्त्र, अलंकार वगेरे देवलोकथी मोकलवा लाग्या।

अेकवार राजगृह नगरमां दूर देशमांथी अेक वेपारी राजा श्रेणिकने रत्नकंबल वेचवा आव्यो। रत्नकंबलो खूब मोंघा होवाथी राजाअे ते खरीदी नहि। आथी वेपारी निराश थईने नगरना अन्य श्रीमंत शेठ-श्रेष्ठिने त्यां फरतो फरतो भद्रा माता पासे पहोंच्यो। भद्रा माताअे मोंमांग्यु धन आपी ते १६ रत्नकंबलो खरीदी लीधी। भद्रा माताअे ते रत्नकंबलो ओछी होवाथी शालिभद्रनी ३२ पत्नीओने अडधां टुकडा करीने पगलूछणिया तरीके वापरवा आपी दीधी। श्रेणिक राजाने आ वातनी तेना सेवको द्वारा खबर पडी। तेमने विचार थयो के 'अहो! हु राजा जे अेक रत्नकंबल न खरीदी शक्यो ते अेक वेपारीनी पत्नीअे बधी कंबलो खरीदी लीधी, तो तेओ केटला धनवान अने पुण्यवान हशे!' तेमणे पोताना अेक सेवकने शालिभद्रने राजदरबारमां बोलाववा मोकल्या त्यारे

भद्रा माता पोते राजदरबारमां आव्यां अने राजाने कह्युं के "शालिभद्र तो घरनी बहार क्यारेय नीकळता ज नथी, तो आप ज अमारे घेर पधारी दर्शन देवानी कृपा करो।"

राजा श्रेणिके माता भद्रानुं आमंत्रण स्वीकारी लीधुं अने स्वयं शालिभद्रने घेर मळवा गया। भद्रा माता शालिभद्रने बोलाववा तेमना खंडमां गया अने कह्युं, "बेटा! श्रेणिक महाराजा पधार्या छे, तमे नीचे आवो।" त्यारे शालिभद्रअे माताने कह्युं, "वेपार तो आप जुओ छो माटे जे वस्तु होय ते मूल्य चूकवीने भंडारमां मूकावी दो।" भद्रा माताअे हसतां हसतां कह्युं, "बेटा! श्रेणिक तो आपणा स्वामी छे, नाथ छे, खरीद-वेचाण करवानी वस्तु नथी, आपणे तेनी प्रजा छीअे, ते आपणी रक्षा करे छे, तेमने आदर देवो ते आपणुं कर्त्तव्य छे।" मातानी आ वात जाणीने शालिभद्र विचारमां पडी गया के 'मारा माथे पण स्वामी छे? मारा माथे नाथ छे? हुं संपूर्ण स्वतंत्र अने सुरक्षित नथी?' आम विचारतां ते राजा पासे आव्यो। तेमने प्रणाम कर्या। परन्तु हवे तेमनुं मन संसारथी विरक्त, उदास थई गयुं हतुं। हवे तेओ पण पिताना रस्ते चालीने स्वतंत्रता प्राप्त करवा ईच्छता हता।

सद्‌भाग्ये अेक दिवस तेमना नगरमां चार ज्ञानना धारक आचार्य **धर्मघोष मुनि** पधार्या। तेमनी वैराग्य वाणी सांभळीने शालिभद्र आनंदित थई गया। तेमनो वैराग्य कूदका मारवा लाग्यो।

घरे आवीने तेमणे माताने कह्युं, "माता! आजे में निर्ग्रंथ गुरु पासे धर्म उपदेश सुण्यो छे, धर्म संसारनां सर्व दु:खोथी मुक्त करावनार छे, मने ते धर्म प्रत्ये रुचि अने श्रद्धा थई छे, तेथी हुं पण मारा पिताना पंथे चालीने दीक्षा लेवा मांगुं छुं।"

माता भद्राअे तेने संयमनां कष्टोनुं वर्णन करतां कह्युं, "बेटा! तारो विचार तो उत्तम छे पण तारो उछेर तो खूब भोग-विलास अने पुण्यमां थयो छे, तो तुं संयमनां कष्टोने सहन नहि करी शके! लोखंडना चणा चाववा, तलवारनी धार पर चालवुं, महासागरने हाथेथी तरीने पार करवो जेम कठण छे, तेम संयम पाळवो पण कठण छे। ताराथी संयमनी विशुद्ध साधना केवी रीते थशे?" शालिभद्रे शांत चित्ते कह्युं, "माता! जेणे साधना अने संयमनो दृढ निर्णय करी लीधो छे, तेणे दु:खो अने परिषहोने आमंत्रण आपी दीधुं छे। कायर होय छे ते ज दु:खथी डरे छे। हुं सर्व कष्टो अने परिषहोने सहन करीश माटे आप आज्ञा आपो।" माताअे कह्युं, "बेटा! तुं दीक्षा लेवा ईच्छे छे तो पहेलां थोडोक त्यागी बन। पछी सर्वत्यागी बनजे!" मातानी वात स्वीकारी शालिभद्र रोज अेक अेक पत्नीनो त्याग करवा लाग्या।

आ समाचार शालिभद्रनी बहेन सुभद्राने मळतां ते अत्यंत दु:खी थई गई अने पोताना पति धन्नाने स्नान करावतां आंखमांथी आंसुनी धार वहेवा लागी। कारण जाणतां धन्नाअे कह्युं, "त्याग करवो होय तो सिंहनी जेम अेकसाथे छोडवुं जोईअे। आ तो कायरता कहेवाय।"

पतिनो व्यंग सांभळी अने पत्नी बोली, "जो त्यागी बनवुं सरळ छे तो तमे ज केम सर्वस्व त्यागी दीक्षा नथी लेता?" बस, धन्नाजी तरत ज ऊठ्या अने कह्युं, "में अत्यारे ज तमने बधांने त्यागी

दीधां। हुं दीक्षा लेवा जाउं छुं।" पतिने जतां जोई पत्नीओ पण दीक्षा लेवा तैयार थई गई अने बधांओ एकसाथे भगवान पासे आवी दीक्षा लीधी। ज्यारे शालिभद्रने आ समाचार मळ्या तो तेओ पण तुरंत दीक्षा लेवा तैयार थई गया।

अंते सुंदर संयम पालन करी आयुष्य पूर्ण करी तेओ बन्ने सर्वार्थसिद्ध महाविमानमां देव तरीके उत्पन्न थया। त्यांथी पाछो मनुष्य भव प्राप्त करी, दीक्षा लई, साधना करी मोक्ष जशे।

धन्य हो धन्ना अने शालिभद्रना त्यागी तपोमय जीवनने!

अपेक्षित प्रश्नो

(१) संगम कोण हतो? (२) संतने जोई संगमे शुं विचार्युं? (३) संगम मरीने शुं बन्यो? (४) 'शालिभद्र' नाम शाथी पड्युं? (५) रत्नकंबल कोणे, केटला खरीद्या?कोणे न खरीद्या? (६) श्रेणिकनुं नाम सांभळी शालिभद्रे शुं विचार्युं? (७) धन्नाजी केम दीक्षा लेवा नीकळ्या? (८) तेओ बंने मृत्यु पामीने क्यां गया?

कथा : 4 धर्मरुचि अणगार

चंपा नामनी सुंदर नगरी हती। ते नगरमां **त्रण ब्राह्मण** भाईओ रहेता हता। तेमना नाम हता **सोम, सोमदत्त अने सोमभूति**। तेओ खूब पैसादार, चार वेदना जाणनारा तथा अन्य कर्मोमां पण कुशल हता, ते त्रण भाईओनी पत्नीओनां नाम अनुक्रमथी **नागश्री, भूतश्री अने यशश्री** हतां। ते त्रणे खूब आनंद अने संपथी रहेती हती।

एक दिवस त्रणे भाईओए नक्की कर्युं के 'त्रणे भाईओना घरे वाराफरती भोजन बनावीने बधांओ साथे बेसीने जमवुं।' एकवार नागश्रीनो जमाडवानो वारो हतो तेणे घणां बधां प्रकारनां पकवानो बनाव्यां। 'बधां भाईओनी पत्नीओ करतां पोतानी रसोई सारी छे' तेवुं बताववानी तेने घणी होंश हती।

तेणे रसोईमां ऋतुने अनुरूप एवुं तुंबडीनुं शाक बनाव्युं हतुं। रसोई बनाववानी उतावळमां ते तुंबडुं चाखवानुं भूली गई हती। शाक तैयार थई गया पछी तेणे ते शाकनुं एक टीपुं हाथमां लईने चाख्युं तो कडवुं, न खावा जेवुं अने झेर जेवुं लाग्युं।

'हवे शुं करवुं?हमणां ज बधां आवशे अने शाक जोशे तो मारी मश्करी करशे। मारे आ शाकनो निकाल करी अने बीजुं शाक बनावी लेवुं जोईए।' आवो विचार करीने ते पोताना काममां व्यस्त थई गई।

धर्मघोष नामे आचार्य ते चंपा नगरीमां तेमनां शिष्य समुदाय साथे पधार्या हता। तेमना **धर्मरुचि** नामना अेक उग्र तपस्वी शिष्य हता। तेओ **मासक्षमणना पारणे मासक्षमणनी** अति कठोर तपश्चर्या करता हता।

आजे धर्मरूचिना मासक्षमण तपमां पारणानो दिवस हतो। तेथी तेओ पोताना गुरुनी आज्ञा लईने चंपा नगरीमां गौचरी लेवा माटे अेक घरेथी बीजा घरे फरता फरता नागश्री ब्राह्मणीने घरे पहोंची गया। धर्मरुचि अणगारने पोताना आंगणे आवेला जोईने नागश्रीने छूपा आनंदनी लागणी थई। पोतानी भूल छूपाववा तेणे 'आ मुनिनुं शुं थशे ?' तेवुं विचार्या विना, तुंबडीनुं बधुं शाक ते मुनिना पात्रामां वहोरावी दीधुं। 'आटलो आहार मने पूरतो छे' तेवुं विचारीने धर्मरुचि अणगार पोताना स्थाने पाछा आवी गया।

धर्मरुचिअे वहोरीने लावेल शाक गुरुदेव धर्मघोष मुनिने बताव्युं। गुरुअे शाकनी गंध पारखी अने अेक टीपुं चाखीने ते शाक कडवुं, झेरी अने न खावा जेवुं जाणी धर्मरुचि अणगारने आज्ञा करतां कह्युं, "जो तमे आ शाक खाशो तो जरूरथी मृत्यु पामशो। माटे हे मुनिराज! तमे आ शाकने अचेत भूमि पर जतनापूर्वक (जोईने) परठी दो अने बीजो निर्दोष आहार लावीने वापरो।"

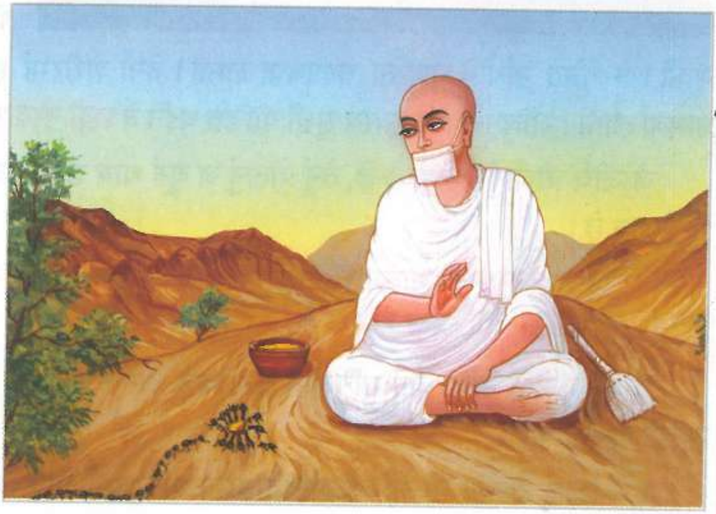

गुरु आज्ञा थतां ज धर्मरुचि अणगारे दूर जईने निर्दोष भूमि जोईने अेक टीपुं शाक जमीन पर मूक्युं। शाक भारे गंधातुं होवाथी तरत ज त्यां हजारो कीडीओ उभरावा लागी। ते कीडीओअे जेवुं ते शाक खाधुं के तरत ज घणी बधी कीडी मरणने शरण थई। धर्मरुचि अणगार आ दृश्य जोईने कंपी ऊठ्या। तेमणे विचार्युं, 'जो शाकना अेक टीपामां हजारो कीडी मरी गई, तो हुं बधुं शाक परठी दउं तो घणी ज हिंसा थशे। घोर हिंसानुं केटलुं मोटुं पाप मारा शिरे आवे!' जैन मुनिओ तो दयाळु होय छे, बीजाना दोष तरफ दृष्टि पण नांखता नथी अने अहिंसाना पालन माटे प्राण देतां पण अचकातां नथी। तेवी ज रीते धर्मरुचि अणगारे पण नागश्रीनो मनथी पण वांक काढ्यो नहि अने विचार कर्यो के 'ज्यां अेक पण कीडीनुं मृत्यु न थाय तेवुं निरवद्य स्थान तो मारुं पेट ज छे। माटे आ बधुं शाक हुं खाई जाउं के जेथी आवा अनेक जीवो बची जाय।' आवुं विचारीने तेओ बधुं शाक खाई गया।

कडवा अने झेरी शाकना प्रभावे तेमना शरीरमां वेदना उत्पन्न थई। ते वेदना कर्कश अने न सहेवाय तेवी हती, छतां तेओ समभावे सहन करता रह्या। तेओअे जीवन पर्यंतनां पापोनी आलोचना, प्रतिक्रमण करी अने समाधिपूर्वक काळधर्म (मृत्यु) पाम्या। धर्मरुचिनो आत्मा सर्वार्थसिद्ध विमानमां देव रूपे उत्पन्न थयो।

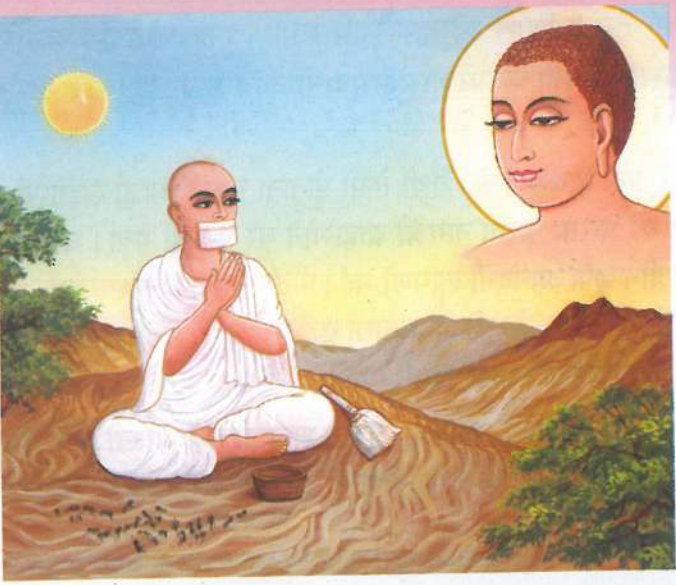

धर्मरुचिने आवतां मोडुं थतां तेमना गुरुअे पोताना शिष्योने तेमनी शोध करवा मोकल्यां। तपास करता करता शिष्योने धर्मरुचि काळधर्म प्राप्त थयानी जाण थई। तेओअे आ समाचार पोताना गुरुने आप्या। गुरुअे पोताना ज्ञान द्वारा आ कृत्य नागश्रीनुं छे तेवुं जाण्युं।

लोकोने आ वातनी धीमे धीमे खबर पडी गई अने लोको नागश्रीने धिक्कारवा लाग्या। पोतानी भूल छूपाववा जतां तेनी आबरुना कांकरा थया। त्रणे भाईओअे भेगा थईने तेने घरमांथी बहार काढी मूकी। ते भीख मांगीने गुजरान चलाववा लागी। तेना शरीरमां १६ रोगो उत्पन्न थया, तेथी ते खूब पीडा पामवा लागी। जीवनना अंत समय सुधी पीडित थईने ते छठ्ठी नरकमां उत्पन्न थई।

जे जीव बीजानुं बूरुं इच्छे छे, तेनुं पोतानुं ज बूरुं थाय छे। जे जीव बीजानुं भलुं ईच्छे छे, तेनुं पोतानुं पण भलुं थाय छे।

धर्मरुचि अणगारनो आत्मा सर्वार्थसिद्ध देवलोकथी च्यवीने महाविदेह क्षेत्रमां जईने सर्व कर्म खपावी सिद्ध (मोक्ष) थई गयो।

धन्य छे अेवा उत्तम जैन मुनिओने के जेमणे अनेक जीवोनी रक्षा माटे पोताना प्राण अर्पण करी मोक्ष सुखने पामी गया!

(धर्मरुचि अणगारनो अधिकार ज्ञाताधर्मकथा सूत्रमां आवे छे।)

अपेक्षित प्रश्नो

(१) नागश्रीअे कयुं खराब काम कर्युं? (२) धर्मरुचि अणगार कया कारणोसर जैन धर्मना इतिहासमां अमर थई गया? (३) धर्मरुचि अणगारनो अधिकार कया सूत्रमां आवे छे? (४) धर्मरुचि अणगारना गुरुनुं नाम शुं हतुं? (५) नागश्री मरीने क्यां गई? (६) धर्मरुचि अणगारे शुं विचार कर्यो? (७) नागश्रीअे शा माटे धर्मरुचिने बधुं शाक वहोरावी दीधुं? (८) शाक परठी आववानुं कोणे कोने कह्युं? (९) चंपा नगरीमां केटला ब्राह्मण भाईओ रहेता हता? तेमनां तथा तेमनी पत्नीनां शुं नाम हतां? (१०) धर्मरुचिनो आत्मा अत्यारे क्यां छे?

काव्य विभाग

१. रत्नाकर पच्चीसी (१३ थी २५ कडी)

आवेल दृष्टि मार्गमां मूकी महावीर! आपने,
में मूढधीओ हृदयमां ध्याया मदनना चापने।
नेत्र बाणो ने पयोधर नाभि ने सुंदर कटि,
शणगार सुंदरीओ तणां छटकेल थई जोया अति...१३

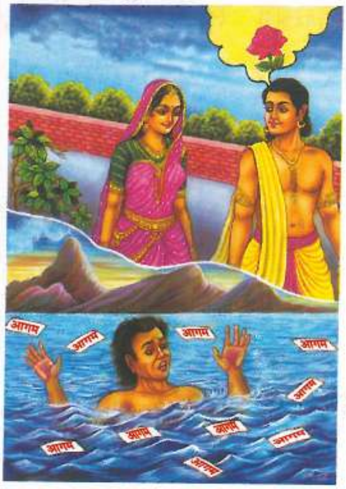

मृगनयणी सम नारी तणा मुखचंद्र निरखवावती,
मुज मन विशे जे रंग लाग्यो अल्प पण गूढो अति।
ते श्रुतरूप समुद्रमां धोयां छतां जातो नथी,
तेनुं कहो कारण तमे बचुं केम हुं आ पापथी...१४

सुंदर नथी आ शरीर के समुदाय गुण तणो नथी,
उत्तम विलास कळा तणो देदीप्यमान प्रभा नथी।
प्रभुता नथी तो पण प्रभु अभिमानथी अक्कड फरुं,
चोपाट चार गति तणा संसारमां खेल्या करुं...१५

आयुष्य घटतुं जाय तो पण पाप बुद्धि नव घटे,
आशा जीवननी जाय पण विषयाभिलाषा नव मटे।
औषध विशे करुं यत्न तो पण धर्मने हुं नव गणुं,
बनी मोहमां मस्तान हुं पाया विनाना घर चणुं...१६

आत्मा नथी परभव नथी वळी पुण्य पाप कशुं नथी,
मिथ्यात्वनी कटु वाणी में धरी कान पीधी स्वादथी।
रवि सम हता ज्ञाने करी प्रभु आपश्री तो पण अरे!
दीवो लई कूवे पड्यो धिक्कार छे मुजने खरे!...१७

में चित्तथी नहि देवनी के पात्रनी पूजा चही,
ने श्रावको के साधुओनो धर्म पण पाळ्यो नहि।
पाम्यो प्रभु नरभव छतां रणमां रड्या जेवुं थयुं,
धोबी तणां कुत्ता समुं मम जीवन सहु अेळे गयुं...१८

हुं कामधेनु कल्पतरु चिंतामणिना प्यारमां,
खोटां छतां झंख्यो घणुं बनी लुब्ध आ संसारमां।
जे प्रगट सुख देनार तारो धर्म पण सेव्यो नहि,
मुज मूर्ख भावोने निहाळी नाथ कर करुणा कंई...१९

में भोग सारा चिंतव्या पण रोग सम चिंतव्या नहि,
आगमन ईच्छ्युं धन तणुं पण मृत्यु ने प्रीछ्युं नहि।
नहि चिंतव्युं में नर्क काराग्रह समी छे नारीओ,
मधुबिंदुनी आशा महीं भय मात्र हुं भूली गयो...२०

हुं शुद्ध आचारो वडे साधु हृदयमां नव रह्यो,
करी काम पर उपकारना यश पण उपार्जन नव कर्या।
वळी तीर्थना उद्धार आदि कोई कार्यो नव कर्यां,
फोगट अरे! आ लक्ष चोराशी तणां फेरा फर्या...२१

गुरु वाणीमां वैराग्य केरो रंग लाग्यो नहि अने,
दुर्जन तणां वाक्यो महीं शांति मळे कयांथी मने?
तरुं केम हुं संसार आ अध्यात्म तो छे नहि जरी,
तूटेल तळियानो घडो जळथी भराये केम करी?...२२

में परभवे नथी पुण्य कीधुं ने नथी करतो हजी,
तो आवता भवमां कहो क्यांथी थशे हे नाथजी?
भूत भावि ने सांप्रत त्रणे भव नाथ हुं हारी गयो,
स्वामी त्रिशंकु जेम हुं आकाशमां लटकी रह्यो...२३

अथवा नकामुं आप पासे नाथ शुं बकवुं घणुं?
हे देवताना पूज्य! आ चारित्र मुज पोतातणुं।
जाणो स्वरूप त्रण लोकनुं त्यां मारुं तो शुं मात्र आ?
ज्यां क्रोडनो हिसाब नहि त्यां पाईनी तो वात क्यां?...२४

(शार्दूलविक्रीडित छंद)

ताराथी न समर्थ अन्य दिननो उद्धारनारो प्रभु,
माराथी नहि अन्य पात्र जगमां जोतां जडे हे विभु!
मुक्ति मंगल स्थान तो य मुजने ईच्छा न लक्ष्मी तणी,
आपो सम्यग्रत्न श्याम जीवने तो तृप्ति थाये घणी...२५

साधु वंदना (कडी १ थी १५)

नमुं अनंत चोवीसी, ऋषभादिक महावीर,
जेणे आर्यक्षेत्रमां घाली धर्मनी शीर...१

महा अतुल्य बळी नर, शूर वीर ने धीर,
तीर्थ प्रवर्तावी, पहोंच्या भव जळ तीर...२

सीमंधर प्रमुख, जघन्य तीर्थंकर वीस,
छे अढी द्वीपमां, जयवंता जगदीश...३

अेकसोने सित्तेर, उत्कृष्ट पदे जगीश,
धन्य मोटा प्रभुजी, तेमने नमावुं शीश...४

केवळी दोय क्रोडी, उत्कृष्टा नव क्रोड,
मुनि दोय सहस्र क्रोडी, उत्कृष्ट नव सहस्त्र क्रोड...५

विचरे विदेहे, मोटा तपस्वी घोर,
भावे करी वंदुं, टाळे भवनी खोड...६

चोवीसे जिनना, सघळा अे गणधर,
चौदसो ने बावन, ते प्रणमुं सुखकार...७

जिन शासन नायक, धन्य श्री वीर जिणंद,
गौतमादिक गणधरे, वर्ताव्यो आनंद...८

श्री ऋषभ देवना, भरतादिक सो पुत्र,
वैराग्य मन आणी, संयम लियो अद्‌भुत...९

केवल उपाज्युं, करी करणी करतूत,
जिनमत दीपावी, सघळा मोक्ष पहुंत...१०

श्री भरतेश्वरना, हुआ पटोधर आठ,
आदित्य जशादिक, पहोंच्या शिवपुर वाट...११

श्री जिन अंतरना, हुआ पाट असंख्य,
मुनि मुक्ते पहोंच्या, टाळी कर्मनो वंक...१२

धन्य 'कपिल' मुनिवर, नमुं 'नमि' अणगार,
जेणे तत्क्षण त्याग्यो, सहस्त्र रमणी परिवार...१३

मुनिवर हरिकेशी, 'चित्त' मुनीश्वर सार,
शुद्ध संयम पाळी, पाम्या भवनो पार...१४

वळी 'इषुकार' राजा, घेर 'कमळावती' नार,
'भृगु' ने 'यशा', तेमना दोय कुमार...१५

(साधु वंदना अपूर्ण...)

।।श्रेणी ४ अभ्यासक्रम समाप्त।।